भापनि

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड
वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार की संस्था
The Jute Corporation Of India Limited
A Government of India Enterprise under Ministry of Textiles

पटसन ज्योति

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड , प्रधान कार्यालय कोलकाता की वार्षिक गृह हिंदी पत्रिका

सितम्बर, 2025

अंक 10

दिनांक 15 अगस्त, 2025 को पटसन भवन, कोलकाता में ध्वजारोहण करते हुए निगम के अधिकारीगण/कर्मचारीगण

श्रीमती पद्मिनी सिग्ला, संयुक्त सचिव, वस्त्र मंत्रालय को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए श्री अजय कुमार जॉली, तत्कालीन प्रबंध निदेशक एवं श्री कौशिक रक्षित, निदेशक (वित्त)

दिनांक 25 अगस्त, 2025 को नराकास (उपक्रम) कोलकाता के अध्यक्ष महोदय से इस कार्यालय की ओर से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री रमेश कुमार, विभागाध्यक्ष (रा.भा.)

पटसन ज्योति परिवार

पटसन ज्योति

प्रधान कार्यालय कोलकाता की वार्षिक गृह हिंदी पत्रिका, अंक-10, सितम्बर 2025

संरक्षक

श्री शशि भूषण सिंह
प्रबंध निदेशक
भापनि, प्रधान कार्यालय, कोलकाता

मार्गदर्शक

श्री कौशिक रक्षित
निदेशक (वित्त)
भापनि, प्रधान कार्यालय, कोलकाता

मुख्य संपादक
श्री रमेश कुमार
मुख्य प्रबंधक (वित्त) एवं विभागाध्यक्ष (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री कल्याण कुमार मजुमदार
महाप्रबंधक (परि./विप.)

श्री शान्तनू चक्रवर्ती
उप महाप्रबंधक (वित्त)

श्री अभिक साहा
कंपनी सचिव

श्रीमती संदीपा सेन दत्ता
मुख्य प्रबंधक (मानव संसाधन)

श्री जे.पी.के. मंडल
वरिष्ठ अनुवादक (हिंदी)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.		शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
1	संदेश	प्रबंध निदेशक, प्रधान कार्यालय, कोलकाता	शशि भूषण सिंह	4
2		निदेशक (वित्त) की कलम से	कौशिक रक्षित	5
3		संपादकीय	रमेश कुमार	6
4	आलेख, कहानियाँ एवं अन्य रचनाएँ	मुर्शिदाबाद में जूट की खेती और उसमें जूट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड का महत्व	राजेंद्र कुमार दास	7
5		उम्र एक संख्या मात्र है?	अभिजीत दे	9
6		अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह - "भारतीय पटसन निगम लिमिटेड - 8 मार्च 2025"	तोईशब ज्योति गोहेन	10
7		कोलकाता से कामख्या मंदिर तक की यात्रा - एक आध्यात्मिक अनुभव	जालपा भटनागर	11
8		जल है तो कल है	हर्षवर्धन कुमार	12
9		सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन : भा. प. नि. के मानव संसाधन और प्रशासन विभाग का योगदान	मनीष श्रीवास्तव	13
10		पेड़ लगाने की आवश्यकता	दिनी मजूमदार	15
11		धरती पर स्वर्ग : जम्मू और कश्मीर की यात्रा	अमित कर्मकार	16
12		भविष्य में जूट के रेशे का महत्व	राजेश कुमार चौधरी	17
13		हाथ से लिखे गए पत्रों का जादू - एक युग का अंत	प्रियंका मोहन्ती	18
14		भारतीय अर्थशास्त्र के जनक	नीरज कुमार	19
15		बच्चों में नैतिक मूल्य	रमेश कुमार	20
16		कार्य-जीवन संतुलन का महत्व	रवि चौरसिया	21
17		भारत में आर्थिक सुधारों के जनक - डॉ. मनमोहन सिंह	बिजय साहू	22
18		संचार की कला	प्रियंका स्वप्निल मोरे	23
19		सततता : समावेशी और उत्तरदायी विकास की दिशा में	मौतुशी चक्रवर्ती	24
20		स्वतंत्रता संग्राम की विस्मृत नायिका - मातंगिनी हाजरा	वरुण कुमार पोद्दार	25
21		कृत्रिम बुद्धिमता (AI) - भविष्य की बुद्धि	संदीपन रॉय चौधुरी	26
22		गलत होने की कीमत कुछ न करने की कीमत से कम है	चाँदनी पोद्दार	27
23		ऑफिस की खिड़की से दिखता सपना	राहुल रॉय चौधरी	28
24	कव्यांजली	जूट की गाथा	मंजू रानी	29
25		वसंत का आगमन	शंभू प्रसाद सिंह	29
26		सितारों की छत तले	सुलेखा कुंडु	30
27		जागो भारत के सपूत	विश्वजीत पाल	30

हमारे निगम द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ

प्रकाशन सम्पर्क सूत्र
हिंदी विभाग, भारतीय पटसन निगम लिमिटेड, पटसन भवन 3री और 4थी मंजिल, ब्लॉक सी एफ, एक्शन एरिया - 1, न्यू टाउन, कोलकाता 700156

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। अत: पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए पटसन ज्योति परिवार, संपादक एवं प्रबंधकीय मंडल का किसी प्रकार से कोई उत्तरदायित्व नहीं है। नि:शुल्क व आंतरिक वितरण हेतु मुद्रित व प्रकाशित।

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : nandlal@anjaniprakashan.com

प्रबंध निदेशक की कलम से...

शशि भूषण सिंह
प्रबंध निदेशक
भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

प्रिय साथियों,

"पटसन ज्योति" के इस दसवें अंक के प्रकाशन पर आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यों एवं उपलब्धियों का दस्तावेज़ है, बल्कि यह हमारे सामूहिक प्रयास, समर्पण और रचनात्मकता का भी प्रतीक है।

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड ने अपने गौरवशाली सफ़र में अनेक उतार-चढ़ावों का सामना करते हुए आज जिस मुकाम को हासिल किया है, वह हमारे सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की अथक मेहनत और टीम भावना का परिणाम है। बदलते वैश्विक परिदृश्य और प्रतिस्पर्धी बाजार में आगे बढ़ते हुए हमने न केवल अपनी व्यावसायिक नीतियों को मज़बूत किया है, बल्कि अनुसंधान, नवाचार और डिजिटल तकनीक के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कदम बढ़ाए हैं।

इस यात्रा में राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारी कार्य संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बना हुआ है। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि निगम ने हिंदी में कार्य करने की परंपरा को न केवल जीवंत रखा है, बल्कि इसे आधुनिक तकनीकी साधनों के साथ और अधिक सशक्त भी बनाया है। ई-ऑफ़िस, डिजिटलीकरण और ऑनलाइन संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग आज हमारी कार्यकुशलता और पारदर्शिता को और गति प्रदान कर रहा है।

"पटसन ज्योति" जैसे पत्रिका हमारे लिए केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान का साधन नहीं हैं, बल्कि यह हमारे विचारों, उपलब्धियों और सांस्कृतिक धरोहर को साझा करने का मंच भी हैं। मुझे विश्वास है कि यह अंक भी अपने पूर्ववर्ती अंकों की तरह ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि संगठन को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के साथ-साथ हम राजभाषा हिंदी के प्रयोग को और व्यापक बनाते हुए इसे अपनी पहचान और शक्ति का माध्यम बनाएँगे।

आप सभी के सहयोग, समर्पण और निरंतर प्रयासों के लिए मैं अपनी ओर से आभार व्यक्त करता हूँ। आशा है, हमारी यह सामूहिक ऊर्जा भारतीय पटसन निगम लिमिटेड को और अधिक प्रगति के पथ पर अग्रसर करेगी।

धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ।

(शशि भूषण सिंह)

निदेशक (वित्त) की कलम से...

कौशिक रक्षित
निदेशक (वित्त)
भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

प्रिय पाठकवृंद,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पटसन ज्योति का दसवाँ अंक आपके हाथों में है। यह पत्रिका केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि हमारे संस्थान की पहचान, कार्यसंस्कृति और राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता का सशक्त प्रतीक भी है।

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड ने बीते वित्तीय वर्ष में अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। वित्तीय अनुशासन, संसाधनों का कुशल प्रबंधन और पारदर्शी कार्यप्रणाली के परिणामस्वरूप हम अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल रहे हैं। निगम ने आय और व्यय के संतुलन को बनाए रखते हुए न केवल वित्तीय स्थिरता को सुदृढ़ किया है, बल्कि पटसन उद्योग के विकास और किसानों के हितों की रक्षा में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणालियों के प्रयोग और सतत निगरानी से संस्थान की कार्यकुशलता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

साथ ही, मैं यह विशेष रूप से रेखांकित करना चाहता हूँ कि हमारी प्रगति केवल संख्याओं तक सीमित नहीं है। हम राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को भी समान रूप से अपनी जिम्मेदारी मानते हैं। वित्तीय अभिलेखों, पत्राचार तथा आधिकारिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है। मुझे गर्व है कि हमारे अधिकारी और कर्मचारी न केवल अपने दायित्वों का निर्वहन दक्षता से कर रहे हैं, बल्कि हिंदी भाषा के प्रयोग को भी अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना रहे हैं। इससे संस्थान में कार्यकुशलता और पारदर्शिता के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक जुड़ाव को भी बल मिलता है।

मुझे विश्वास है कि पटसन ज्योति का यह अंक आपके लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और आनंददायी सिद्ध होगा। मैं संपादकीय मंडल और सभी रचनाकारों को इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए बधाई देता हूँ तथा पाठकों से अपेक्षा करता हूँ कि वे अपने विचारों और सुझावों से हमें निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

धन्यवाद।

(कौशिक रक्षित)

संपादकीय

रमेश कुमार
मुख्य प्रबंधक (वित्त) एवं विभागाध्यक्ष (राजभाषा)
भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

प्रिय पाठकवृंद,

आपके निरंतर सहयोग और स्नेह से पटसन ज्योति ने एक और महत्वपूर्ण पड़ाव तय किया है और आज आपके समक्ष प्रस्तुत है इसका दसवाँ अंक। यह अंक न केवल हमारी यात्रा का प्रतीक है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और भारतीय पटसन निगम की सांस्कृतिक धरोहर को आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम भी है।

पिछले अंकों की तरह ही इस बार भी हमने साहित्य की विविध विधाओं — लेख, कविताएँ, लघुकथाएँ और विचारोत्तेजक आलेख — को शामिल किया है। साथ ही, इसमें हमारे संस्थान से जुड़े नवाचारों, उपलब्धियों और कर्मचारियों की सृजनशीलता की झलक भी मिलेगी। यह पत्रिका हमारे कार्य और विचारों का दर्पण है, जिसमें हमारी टीम भावना और हिंदी भाषा के प्रति निष्ठा स्पष्ट झलकती है।

हिंदी केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान और एकता का संवाहक है। संस्थान के भीतर इसके प्रयोग को बढ़ावा देना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। पटसन ज्योति इस दिशा में छोटे-छोटे कदम बढ़ाकर एक बड़े लक्ष्य की ओर अग्रसर है। हमें विश्वास है कि यह अंक भी पाठकों को प्रेरणा, ऊर्जा और नई दृष्टि प्रदान करेगा।

इस अंक को तैयार करने में संपादकीय दल का अथक परिश्रम और रचनाकारों का सृजनात्मक योगदान सराहनीय है। मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपने विचारों और रचनाओं से इस पत्रिका को मूल्यवान बनाया।

अंत में, मैं आप सभी पाठकों से निवेदन करता हूँ कि अपने सुझावों और रचनात्मक सहयोग से पटसन ज्योति को निरंतर समृद्ध करते रहें। आपका साथ ही इस यात्रा को सफल और सार्थक बनाएगा।

स्नेहपूर्वक,

रमेश कुमार

(रमेश कुमार)

राजेंद्र कुमार दास
प्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय- कोलकाता

मुर्शिदाबाद में जूट की खेती और उसमें जूट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड का महत्त्व

जूट भारत के पूर्वी राज्यों में उगाई जाने वाली एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में जूट की खेती विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यहाँ की भूमि अत्यधिक उपजाऊ और अनुकूल जलवायु के कारण जूट की खेती के लिए प्रसिद्ध है।इस क्षेत्र में उगाए जाने वाले जूट की गुणवत्ता उच्च होती है और यह देश के विभिन्न हिस्सों में निर्यात किया जाता है। "स्वर्ण रेशा" के रूप में विख्यात जूट इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। यह न केवल किसानों के लिए आजीविका का स्रोत है, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

जूट की खेती का मुर्शिदाबाद में एक लंबा इतिहास है। अंग्रेजों के समय से ही इस क्षेत्र में जूट की खेती होती आ रही है, जब इसे प्रमुख निर्यात वस्तु के रूप में देखा गया था। समय के साथ, जूट ने अपने आर्थिक महत्त्व को बनाए रखा है और आज भी यह जिले के किसानों के लिए जीवनरेखा के समान है।

जूट की खेती: एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण-

जूट की खेती के लिए मुर्शिदाबाद की जलवायु और मिट्टी अत्यधिक उपयुक्त है। यहाँ की जलोढ़ मिट्टी, जो गंगा और उसकी सहायक नदियों द्वारा उपजाऊ बनी रहती है, जूट के पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होती है। अप्रैल-मई के महीनों में जूट की बुआई की जाती है, और मानसून की बारिश इसे तेज़ी से बढ़ने में मदद करती है। जुलाई-अगस्त में फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है, और उसके बाद रेशों को प्रसंस्करण के लिए तैयार किया जाता है।

बुवाई का समय: जूट की बुवाई ढाल वाली भूमि पर फरवरी में और ऊंचाई वाली भूमि में मार्च से जुलाई तक की जाती है।

बीज की मात्रा: सीड ड्रिल से पंक्तियों में बुआई करने पर कैपसुलेरिस की किस्मों के लिए 4 से 5 किलोग्राम और ओलिटेरियस के लिए 3 से 5 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। छिड़कवां बोने पर 5 से 6 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

बीज उपचार: बुवाई से पहले जूट के बीज को थीरम 3 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू पी 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोना चाहिए।

बुवाई की विधि: जूट की बुवाई हल के पीछे करनी चाहिए, लाइनों से लाइनों का दूरी 30 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 7 से 8 सेंटीमीटर तथा गहराई 2 से 3 सेंटीमीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए। मल्टीरो जूट सीड ड्रिल के प्रयोग से 4 लाइनों की बुआई एक बार में हो जाती है तथा एक व्यक्ति एक दिन में एक एकड़ की बुआई कर सकता है।

उपयुक्त भूमि: जूट की खेती के लिए हल्की बलुई और दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। अधिक जल भराव वाली जमीन में इसकी खेती करना उचित नही होता। क्योंकि अधिक टाइम तक पानी के भरे रहने से पौधे के नष्ट होने और गुणवत्ता में कमी आने का जोखिम होता है। इसकी खेती के लिए जमीन का पी.एच. मान सामान्य होना चाहिए।

अनुकूल जलवायु: जूट की खेती के लिए गर्म और आद्र जलवायु उपयुक्त होती है। इसके पौधों को बारिश की जरूरत होती है। लेकिन असामान्य बारिश इसकी पैदावार को नुक्सान पहुँचाती है। इसकी पैदावार गर्मी और बरसात के मौसम में की जाती है। इस कारण सर्दी का प्रभाव इसकी फसल पर देखने की नही मिलता।

खेत की तैयारी: मिट्टी पलटने वाले हल से एक जुताई और बाद में 2 से 3 जुताइयां देशी हल या कल्टीवेटर से करके, पाटा लगाकर भूमि को भुरभुरा बनाकर खेत को बुआई के लिए तैयार किया जाता है। चूंकि जूट का बीज बहुत छोटा होता है, इसलिए मिट्टी का भुरभुरा होना आवश्यक है, ताकि जूट के बीज का जमाव अच्छा हो। भूमि में उपयुक्त नमी जमाव के लिए अच्छी समझी जाती है।

खाद एवं उर्वरक: जूट की खेती से अधिक उपज पाने के लिए इसकी खेती में उर्वरक की उचित मात्रा देना जरूरी होता है। इसके लिए खेत की जुताई के वक्त 25 से 30 टन सड़ी हुई पुरानी गोबर की खाद खेत में डालकर उसे अच्छे से मिट्टी में मिला दें। जैविक

खाद के अलावा अगर किसान भाई रासायनिक खाद का उपयोग अपने खेतों में करना चाहता है तो इसके लिए खेत की आखिरी जुताई के वक्त 2:1:1 के अनुपात में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश की 90 किलो मात्रा प्रति हेक्टेयर हिसाब से खेत में डालकर मिट्टी में मिला दें। उसके बाद नाइट्रोजन की आधी मात्रा को दो बार पौधों को सिंचाई के साथ दें।

किट एवं रोग और उनके रोकथाम: जूट की फसल आमतौर पर दो बीमारियों से प्रभावित होती है- जड़ और तना सड़न तथा इन बीमारियों से कभी-कभी फसल पूर्णत नष्ट हो जाती है। इससे बचाव के लिए बीज को शोधित करके ही बोना चाहिए। इन बीमारियों से बचाव के लिये ट्राइकोडरमा विरिडी 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर तथा 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर 50 किलोग्राम गोबर की सड़ी खाद में मिलाकर प्रयोग करना चाहिए।

जूट फसल पर सेमीलूपर, एपियन, स्टेम बीविल कीटों का प्रकोप होता है। इन कीटों के रोकथाम हेतु 1.5 लीटर डाइकाफाल को 700 से 800 लीटर पानी में घोलकर फसल की 40 से 45 और 60 से 65 तथा 100 से 105 दिन की अवस्थाओं पर छिड़काव किया जा सकता है| इन कीटों के नियंत्रण के लिए नीम उत्पादित रसायन एजाडिरेक्टिन 0.03 प्रतिशत के 1.5 लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण: सभी फसलों की तरह इसकी फसल को भी खरपतवार नियंत्रण की जरूरत होती है। जुट की खेती में खरपतवार नियंत्रण के लिए खेत की नीडाई गुड़ाई की जाती है। इसके पौधों की पहली गुड़ाई बीज रोपण के 25 से 30 दिन बाद जब पौधा लगभग एक फिट का हो जाए तब कर देनी चाहिए। इसके बाद पौधों की 15 से 20 दिन के अन्तराल में एक गुड़ाई और कर देनी चाहिए।

रासायनिक तरीके से खरपतवार नियंत्रण के लिए बीज रोपाई के तुरंत बाद पेंडीमेथिलीन या फ्लूक्लोरेलिन का छिडकाव पौधों पर कर देना चाहिए।

सिंचाई: जूट के पौधों को सिंचाई की काफी कम जरूरत होती हैं। क्योंकि इसकी खेती ऐसे वक्त की जाती है, जब सम्पूर्ण भारत वर्ष में बारिश का मौसम बना रहता है। जून में इसकी रोपाई के वक्त मानसून का दौर होता है। लेकिन बारिश के बाद जब खेत में नमी की मात्रा कम होने लगे या समय पर बारिश ना हो तो खेत में सिंचाई कर देना चाहिए।

जुट के पौधो की कटाई एवं सड़ाना: उत्तम रेशा प्राप्त करने हेतु 110 से 120 दिन की जूट फसल हो जाने पर कटाई की जा सकती है। जल्दी कटाई करने पर प्रायः रेशे की उपज कम प्राप्त होती है। लेकिन देर से काटी जाने वाली फसल की अपेक्षा रेशा अच्छा होता है। छोटे और पतले व्यास वाले पौधों को छांटकर अलग-अलग छोटे-छोटे बंडलों में (15 से 20 सेंटीमीटर) बांधकर दो तीन दिन तक खेत में पत्तियों के गिरने हेतु छोड़ देना चाहिए।

कटे हुए जूट पौधों के बन्डलों को पहले खड़ी दशा में 2 से 3 दिन पानी में रखने के बाद एक दो पंक्ति में लगाकर तालाब या हल्के बहते हुए पानी में 10 सेंटीमीटर गहराई तक जाकर बनाकर डुबोने के पूर्व पानी वाले खरपतवार से ढककर किसी वजनी पत्थर के टुकड़े से दबा देना चाहिए, साथ ही इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बन्डल तालाब की निचली सतह से न छूने पाये। सामान्य स्थिति होने पर 15 से 21 दिन में पौधा सड़कर रेश निकालने योग्य हो जाता है। बैक्टीरियल कल्चर के प्रयोग से सड़न में 4 प्रतिशत समय की बचत के साथ-साथ रेशे की गुणवत्ता बढ़ जाती है।

रेशा निकालना और सुखाना: प्रत्येक सड़े हुए जूट पौधों के रेशों को अलग-अलग निकालकर हल्के बहते हुए साफ पानी में अच्छी तरह धोकर किसी तार, बांस इत्यादि पर सामानान्तर लटकाकर कड़ी धूप में 3 से 4 दिन तक सुखा लेना चाहिए| सुखाने की अवधि में रेशे को उलटते-पलटते रहना चाहिए। सघन पद्धतियों को अपनाकर 25 से 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रेशे की उपज प्राप्त की जा सकती है।

जूट की खेती में भूमि की गहरी जुताई, बीजारोपण, निराई-गुड़ाई और कटाई-प्रसंस्करण की प्रक्रियाएँ शामिल हैं। इन सभी प्रक्रियाओं में कुशलता की आवश्यकता होती है, और इनकी सही ढंग से देखभाल करने पर ही उच्च गुणवत्ता वाली

जूट की पैदावार संभव हो पाती है। हालांकि, यह खेती अपने आप में चुनौतियों से भरी होती है, जैसे कि प्राकृतिक आपदाओं, कीटों का प्रकोप, और बाजार की अस्थिरता।

जूट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (JCI): किसानों की रक्षा में एक दृढ़ प्रहरी: इन सभी चुनौतियों से निपटने के लिए जूट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (JCI) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। 1971 में स्थापित JCI, भारत सरकार का एक सार्वजनिक उपक्रम है, जिसका मुख्य उद्देश्य जूट किसानों की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करना और उन्हें उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाना है।

JCI का सबसे महत्वपूर्ण कार्य किसानों से जूट की खरीद करना है। यह खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर की जाती है, जिससे किसानों को बाजार की अस्थिरता और कीमतों में उतार-चढ़ाव से सुरक्षा मिलती है। JCI के माध्यम से किसानों को यह आश्वासन मिलता है कि उनकी मेहनत का उचित मुआवजा उन्हें अवश्य मिलेगा, चाहे बाजार की स्थिति कैसी भी हो।

मुर्शिदाबाद में जूट की खेती का भविष्य उज्जवल है, और इसके पीछे JCI की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। JCI के प्रयासों से न केवल जूट की खेती को स्थायित्व मिला है, बल्कि यह क्षेत्र वैश्विक जूट बाजार में भी अपनी पहचान बना रहा है।

JCI द्वारा किसानो के लिए बहुत सारे परियोजना चलाये जा रहे हैं, जैसी की आई-केयर परियोजना(ICARE Project) जिसके द्वार किसानों को रियायती दरों पे बीज दी जाती है, और फसल की बुआई से लेकर फसल तयार होने तक किसानों की मदद की जाती है।

मुर्शिदाबाद में जूट की खेती का इतिहास और भविष्य दोनों ही अत्यंत गौरवशाली हैं। जूट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (JCI) के साथ मिलकर काम करने से किसानों को न केवल आर्थिक सुरक्षा मिलती है, बल्कि उनके उत्पादों की गुणवत्ता में भी सुधार होता है। जूट की खेती और JCI का यह अभूतपूर्व गठबंधन भारतीय कृषि के भविष्य को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है, जिसमें किसान, पर्यावरण, और समाज तीनों को लाभ होगा।

मुर्शिदाबाद का जूट उद्योग आने वाले समय में और अधिक ऊँचाइयों को छूएगा, और इसके पीछे JCI की प्रतिबद्धता और किसानों की मेहनत का अभूतपूर्व योगदान रहेगा।

उम्र एक संख्या मात्र है?

अभिजीत दे
अति. उप प्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

"उम्र तो बस एक संख्या है" — यह वाक्य हम अक्सर सुनते हैं, लेकिन यह उस जगह पर शायद ही सच हो पाता है जहाँ इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है: नौकरी के बाज़ार में।

सिद्धांत रूप से, उम्र कभी भी किसी की योग्यता, रचनात्मकता या संभावनाओं को तय नहीं करनी चाहिए। लेकिन व्यवहार में, भर्ती प्रक्रिया और कार्यस्थलों में उम्र आज भी एक मौन भेदभाव का माध्यम बनी हुई है। कभी किसी को "बहुत छोटा" मान लिया जाता है, तो कभी "अब बूढ़ा हो गया है" कहकर दरकिनार कर दिया जाता है। ऐसे पूर्वा

ग्रह समावेशिता और प्रगति की मूल भावना को कमजोर करते हैं।

वास्तव में, उम्र केवल तभी "सिर्फ एक संख्या" बनती है जब अवसर सबके लिए बराबर हों। जब चयन कौशल, दृष्टिकोण और क्षमताओं के आधार पर हो — न कि जन्मतिथि के आधार पर — तभी उम्र अप्रासंगिक हो जाती है।

एक सच्चे समावेशी कार्यस्थल के लिए यह आवश्यक है कि वह उम्र से जुड़ी सभी बाधाओं को समाप्त करे। प्रतिभा की कोई समय-सीमा नहीं होती। न ही जिज्ञासा, महत्वाकांक्षा या सीखने की इच्छा का कोई अंत होता है। युवा ऊर्जा और नवाचार लाते हैं, जबकि उम्र अनुभव, स्थिरता और गहराई। साथ मिलकर ये विविधतापूर्ण और सशक्त कार्यस्थल बनाते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि व्यवसाय, सलाहकार कार्य और स्वतंत्र पेशों में उम्र शायद ही कोई बाधा बनती है। वहाँ मूल्य को देखा जाता है, न कि उम्र को।

नौकरी की दुनिया में अगर उम्र को मापदंड मानना बंद किया जाए, तभी हम कह सकते हैं कि उम्र वाकई कोई मायने नहीं रखती।

इसलिए ज़रूरत है कि हम सिस्टम को बदलें — उम्र को बाधा नहीं, एक संसाधन के रूप में देखें। तभी हम पूरे विश्वास से कह सकेंगे: उम्र वास्तव में सिर्फ एक संख्या है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह- "भारतीय पटसन निगम लिमिटेड-8 मार्च, 2025"

तोईशब ज्योति गोहेन
उप प्रबंधक (मानव संसाधन)
क्षेत्रीय कार्यालय - नगांव

हर साल 8 मार्च को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपलब्धियों को मान्यता देने वाला वैश्विक दिवस है। यह लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और जीवन के सभी पहलुओं में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कार्रवाई का आह्वान भी करता है।

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड ने इस खास दिन को पूरे उत्साह और गर्व के साथ मनाया और पूरे देश में अपने कार्यालयों में जश्न मनाया। इस पहल का उद्देश्य अपने महिला कर्मचारियों के समर्पण, प्रतिस्कंदन और उपलब्धियों का सम्मान और सराहना करना था, जो संगठन के विकास और सफलता में बहुत योगदान देती हैं।

समारोह की मुख्य विशेषताएं: महिला कर्मचारियों को उनके समर्पण, उपलब्धियों और संगठन में उनके अमूल्य योगदान के लिए सम्मानित और सराहा गया। आभार और प्रोत्साहन के भावपूर्ण शब्द साझा किए गए, जिससे सकारात्मक और समावेशी माहौल को बढ़ावा मिला।

केक काटने का समारोह: समारोह की शुरुआत एक हर्षोल्लासपूर्ण केक काटने की रस्म के साथ हुई, जो संगठन में महिलाओं की एकता, प्रशंसा और मधुर सफलता का प्रतीक था।

प्रेरणादायी भाषण: महिला सशक्तिकरण, नेतृत्व और समावेशिता पर ध्यान केंद्रित करते हुए विचारोत्तेजक भाषण दिए गए। वक्ताओं ने समान अवसर प्रदान करने और महिलाओं के विकास और विकास को बढ़ावा देने वाले सहायक वातावरण को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया।

उपहारों का वितरण: आभार और प्रशंसा व्यक्त करने के लिए, सभी महिला कर्मचारियों को उपहार वितरित किए गए, जिससे उत्सव में एक व्यक्तिगत स्पर्श जुड़ गया।

यादगार पलों को कैद किया गया: इस उत्सव को तस्वीरों के माध्यम से खूबसूरती से प्रलेखित किया गया, जिसमें दिन के आनंदमय और सशक्त क्षणों को कैद किया गया।

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड एक विविधतापूर्ण, न्यायसंगत और समावेशी कार्यस्थल बनाने की अपनी प्रतिबद्धता में दृढ़ है, जहाँ हर महिला मूल्यवान, सम्मानित और सशक्त महसूस करती है। यह उत्सव न केवल महिलाओं की उपलब्धियों की मान्यता थी, बल्कि लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए संगठन की प्रतिबद्धता की पुष्टि भी थी।

जालपा भटनागर
पति-मनीष श्रीवास्तव
उप प्रबंधक (मानव संसाधन)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

कोलकाता से कामाख्या मंदिर तक की यात्रा – एक आध्यात्मिक अनुभव

कुछ यात्राएं केवल गंतव्य तक पहुँचने के लिए नहीं होतीं, बल्कि आत्मा को छू जाने के लिए होती हैं। मेरी कोलकाता से असम के प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर की यात्रा कुछ ऐसी ही थी। माँ कामाख्या के दर्शन ने मेरे जीवन में आध्यात्मिकता की एक नई रोशनी भर दी। यह यात्रा मेरे लिए न केवल एक धार्मिक यात्रा थी, बल्कि भीतर की खोज और एक आत्मिक जागरण भी था। कामाख्या मंदिर, गुवाहाटी के नीलांचल पर्वत पर स्थित है और यह माँ कामाख्या को समर्पित शक्ति पीठों में से एक है।

यात्रा की शुरुआत

मैंने कोलकाता से गुवाहाटी जाने वाली ट्रेन पकड़ी। यह यात्रा लगभग 17-18 घंटे की थी, लेकिन ट्रेन की खिड़की से बाहर दिखते प्राकृतिक दृश्य और आस-पास के यात्रियों के साथ बातचीत ने समय का पता ही नहीं चलने दिया। जैसे-जैसे हम असम की ओर बढ़ रहे थे, हर स्टेशन पर अलग-अलग संस्कृति की झलक देखने को मिल रही थी। चाय की प्यालियों में असम की खुशबू थी और हर यात्री में अपनापन।

गुवाहाटी पहुंचते ही एक खास ऊर्जा महसूस हुई। स्टेशन से मैंने एक लोकल टैक्सी ली जो मुझे कामाख्या मंदिर तक लेकर गई। मंदिर की ओर जाने वाला रास्ता हरे-भरे पेड़ों और पहाड़ियों के बीच से होकर गुजरता है। जैसे-जैसे मैं ऊपर चढ़ रही थी, मन में श्रद्धा और उत्साह दोनों ही बढ़ते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे माँ खुद अपने धाम तक बुला रही हों।

मंदिर का इतिहास और मान्यता

कामाख्या मंदिर को 51 शक्तिपीठों में से एक प्रमुख शक्तिपीठ माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि जब भगवान शिव सती के मृत शरीर को लेकर विचलित होकर ब्रह्मांड में घूमने लगे, तब भगवान विष्णु ने सती के शरीर को अपने सुदर्शन चक्र से खंड-खंड कर दिया। जहाँ-जहाँ सती के अंग गिरे, वहाँ शक्तिपीठ बने। कामाख्या वह स्थान है जहाँ माँ सती की योनि गिरी थी, इसलिए यह मंदिर विशेष रूप से प्रजनन शक्ति और स्त्रीत्व की पूजा का केंद्र है।

मंदिर के भीतर का अनुभव

कामाख्या मंदिर के दर्शन करना एक अविस्मरणीय अनुभव था। मंदिर परिसर में पहुँचते ही एक अलौकिक ऊर्जा का अनुभव हुआ। मंदिर की वास्तुकला, वातावरण, और वहां की दिव्यता – सब कुछ अत्यंत मनमोहक था। लाल रंग की गुंबदनुमा वास्तुकला और चारों ओर फैली धूप-धूप की महक एक अलग ही वातावरण बना रही थी। मंदिर के मुख्य गर्भगृह तक पहुँचने के लिए लंबी कतार लगी हुई थी, लेकिन हर भक्त के चेहरे पर श्रद्धा और उत्साह था।

अंदर जाते ही एक अजीब सी शांति महसूस हुई। गर्भगृह में माँ का कोई मूर्तिरूप नहीं है, बल्कि एक प्राकृतिक योनिकुण्ड है, जिसमें हर समय जल बहता रहता है। इसी स्थल को अत्यंत पवित्र माना जाता है और यही इस मंदिर की सबसे खास बात है। जब मैंने वहाँ माथा टेका, तो ऐसा लगा मानो सारी थकान, चिंता और दुख माँ ने खुद अपने आँचल में समेट लिए हों। आँखें स्वतः ही नम हो गईं। मैंने माँ से आशीर्वाद लिया, और उस पल एक अनकही शांति मेरे भीतर उतर गई। ऐसा लगा जैसे वर्षों की थकान एक ही पल में उतर गई हो।

विशेष अनुभव

मंदिर में कई साधक और तांत्रिक भी दिखे, जो यहाँ विशेष साधनाएं करते हैं। यह मंदिर तांत्रिक परंपरा का भी केंद्र माना जाता है। अगर आप अंबुबाची मेले के समय यहाँ आएं, तो यह अनुभव और भी अद्वितीय

होता है। उस दौरान मंदिर कुछ दिनों के लिए बंद रहता है क्योंकि यह माना जाता है कि माँ उस समय मासिक धर्म में होती हैं – एक गहन प्रतीक जो नारी शक्ति और प्रकृति के चक्र का आदर करता है।

मंदिर के प्रांगण में स्थित अन्य देवी-देवताओं के छोटे मंदिर भी दर्शनीय हैं, जिनका धार्मिक महत्व भी कम नहीं है, जैसे कि काल भैरव, दश महाविद्या आदि। वहाँ कुछ समय बैठकर ध्यान करने का अवसर मिला, और उस शांति को शब्दों में पिरोना मुश्किल है।

वापसी का अनुभव

माँ का आशीर्वाद लेकर वापस आने का मन नहीं हो रहा था। वापसी की ट्रेन वही थी, लेकिन इस बार मन पहले से अधिक हल्का और शांत था। मंदिर से लौटते समय गुवाहाटी के लोकल बाज़ार से कुछ प्रसाद, और माँ का चित्र भी साथ लायी, जो अब मेरे घर के मंदिर में रखा है। कामाख्या मंदिर की यह यात्रा मेरे लिए एक जीवन बदलने वाला अनुभव थी। माँ की कृपा ने मुझे भीतर तक छू लिया। जो लोग अपने जीवन में अध्यात्म, शक्ति, और शांति की तलाश कर रहे हैं, उन्हें एक बार इस शक्ति पीठ के दर्शन अवश्य करने चाहिए। यह यात्रा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि आत्मिक भी है – जहाँ आप खुद से मिलते हैं। यह अनुभव जीवन भर स्मरणीय रहेगा।

जल है तो कल है

जल से जीवन पलता है,
हर जीव जल से चलता है।
बिन जल सुखी धरती होगी,
हरियाली भी मरती होगी।
इस जल को व्यर्थ न जाने दो,
हर बूंद बचाने को आपस में प्रण लो।

जल है तो कल है, इसके बिना जीवन की संकल्पना संभव नहीं है। जल प्रकृति का अनमोल धरोहर है। किन्तु जिस प्रकार जल का अनियंत्रित दोहन होता जा रहा है, उससे कल की चिंता स्वाभाविक है। इसलिए जल का सतत उपयोग, संरक्षण आवश्यक हो गया है।

प्राचीन काल में देखो तो मानव सभ्यता का विकास भी जल स्त्रोत के किनारे पर ही हुआ है। चाहे वह हड़प्पा सभ्यता हो, मेसोपोटामिया या फिर मिश्र की सभ्यता इन सभी सभ्यता का अस्तित्व भी जल के स्त्रोत पर ही टीका था। उसमें भी जल संरक्षण को ध्यान में रख कर विभिन्न निर्माण किए जाते थे, जैसे – सिंधु सभ्यता में मोहनजोदडों का विशाल स्नानागार, मोर्य काल में सुदर्शन झील का निर्माण आदि।

वर्तमान समय में भी देखो तो अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

प्रश्न यह उठता है कि अगर वर्तमान में जल संरक्षण नहीं किया गया तो क्या होगा? इस संकट से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर अनेक कदम उठाए गए है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्रसंघ ने जल को विकास की पोषणीयता का मानक माना है। इसलिए जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है।

राष्ट्रीय स्तर पर भारत द्वारा जल संरक्षण के लिए कानूनी नीतिगत और योजनाओं के माध्यम से जल संरक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है। जैसे – जल संरक्षण अधिनियम 1974, जल सूचना केंद्र, अटल भू-जल योजना, केच-द-रन अभियान आदि चलाया जा रहा है।

छोटे-छोटे प्रयासों से ही हम बड़े लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। आवश्यकता है तो सिर्फ उस छोटे प्रयास का। हम सभी मिल कर अमूल्य संसाधनों का दक्षतापूर्ण उपयोग करें साथ ही साथ विभिन्न पद्धतियों द्वारा स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण को बढ़ावा दिया जाए। तभी वर्तमान के साथ – साथ कल पर पड़ने वाले दबाव को कम किया जा सकता है।

हर्षवर्धन कुमार
कनिष्ठ निरीक्षक, लंका डीपीसी
क्षेत्रीय कार्यालय - नगांव

जल संरक्षण करना चाहिए तभी आने वाले कल को बेहतर बनाया जा सकता है। अतः जल है तो जीवन है तो पर्यावरण है, पर्यावरण से ये धरती है और इस धरती से हम सब हैं।

सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन: भा.प.नि. के मानव संसाधन और प्रशासन विभाग का योगदान

भारत सरकार समय-समय पर ऐसी योजनाएँ शुरू करती है, जो न केवल डिजिटल और प्रशासनिक दक्षता बढ़ाती हैं, बल्कि समाज और पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारियों को भी रेखांकित करती हैं। ऐसी ही दो महत्वपूर्ण योजनाएँ हैं – 'iGOT कर्मयोगी प्रशिक्षण' और 'एक पेड़ माँ के नाम'। इन योजनाओं को भारतीय पटसन निगम लिमिटेड (भा.प.नि) के मानव संसाधन और प्रशासन विभाग ने प्रभावी ढंग से लागू कर एक मिसाल कायम की है। इन प्रयासों से न सिर्फ कर्मचारियों का कौशल बढ़ा है, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय स्तर पर भी सकारात्मक असर देखने को मिला है।

मनीष श्रीवास्तव
उप प्रबंधक (मा. सं)
प्रधान कार्यालय कोलकाता

1. i-GOT कर्मयोगी प्रशिक्षण: डिजिटल युग में कर्मचारी विकास का मजबूत आधार

iGOT कर्मयोगी प्रशिक्षण पोर्टल (iGOT-Karmayogi portal) भारत सरकार की 'मिशन कर्मयोगी' पहल के तहत एक डिजिटल लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म है, जिसका उद्देश्य सरकारी कर्मचारियों को 21वीं सदी की ज़रूरतों के अनुसार प्रशिक्षित करना है। इस पोर्टल के माध्यम से कर्मचारी अपनी कार्यकुशलता में सुधार कर सकते हैं और प्रशासनिक कार्यों में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं।

iGOT कर्मयोगी प्रशिक्षण के लाभ:

1. क्षमता निर्माण: यह प्लेटफ़ॉर्म अधिकारियों को उनके कौशल और दक्षताओं को विकसित करने में मदद करने के लिए क्यूरेटेड पाठ्यक्रम, मूल्यांकन और इंटरैक्टिव मॉड्यूल सहित शिक्षण सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है।
2. प्रदर्शन निगरानी: यह प्रमुख प्रदर्शन संकेतकों के आधार पर उपयोगकर्ताओं के मूल्यांकन की अनुमति देता हैं।
3. विविधता और चयन की स्वतंत्रता: पोर्टल पर हजारों पाठ्य सामग्री, वीडियो, केस स्टडी, सिमुलेशन और मूल्यांकन मॉड्यूल उपलब्ध हैं, जिन्हें कर्मचारी अपनी ज़रूरत और रुचि के अनुसार चुन सकते हैं।
4. 24x7 उपलब्धता: यह शिक्षण संसाधन 24 घंटे, सप्ताह के सातों दिन उपलब्ध हैं। इससे कर्मचारी अपने सुविधा अनुसार कभी भी और कहीं भी सीखने की प्रक्रिया जारी रख सकते हैं।
5. पहुँच: प्लेटफ़ॉर्म मोबाइल और वेब प्लेटफ़ॉर्म दोनों के माध्यम से सुलभ है, जिससे कभी भी, कहीं भी सीखने में सक्षम होता है।
6. कैरियर विकास: यह उपयोगकर्ताओं को अपने कैरियर पथों का प्रबंधन करने और दक्षताओं को जोड़ने में मदद करता है, जो उनके पेशेवर विकास में योगदान देता है।

भा.प.नि. द्वारा क्रियान्वयन की प्रमुख बातें:

- भा.प.नि के मानव संसाधन विभाग ने देश भर में फैले अपने कार्यालयों के सभी कर्मचारियों को इस पोर्टल पर

पंजीकृत कराया और उन्हें विभिन्न प्रशिक्षण मॉड्यूल्स से परिचित कराया। यह कार्य चरणबद्ध और नियोजित ढंग से किया गया। इससे कर्मचारियों को विभिन्न प्रशिक्षण मॉड्यूल्स का लाभ मिला।

- विभिन्न विभागीय ज़रूरतों के अनुसार मॉड्यूल्स जैसे कि नेतृत्व, टीम वर्क, ग्राहक सेवा, नैतिकता, प्रशासनिक दक्षता आदि का चयन किया गया। इससे कर्मचारियों की कार्यकुशलता में सुधार हुआ।
- मानव संसाधन विभाग ने कर्मचारियों की सीखने की प्रक्रिया को ट्रैक किया और प्रगति रिपोर्ट तैयार की, जिससे प्रशिक्षण का असर मापा जा सके।
- कर्मचारियों को आवश्यक तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई गई ताकि वे बिना किसी कठिनाई के डिजिटल मंच का लाभ उठा सकें।
- डिजिटल लर्निंग के माध्यम से कर्मचारियों की ज्ञान क्षमता और आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। इससे वे अपने कार्यों को अधिक प्रभावी ढंग से निष्पादित कर पाए।
- कार्य निष्पादन में पारदर्शिता और प्रभावशीलता आई। इससे संगठन की कार्यप्रणाली में सुधार हुआ।

2. एक पेड़ माँ के नाम: प्रकृति और मातृत्व के सम्मान की अनूठी पहल

'एक पेड़ माँ के नाम' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 5 जून 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस पर शुरू की गई एक अभिनव पहल है, जिसमें माँ के सम्मान में एक पौधा लगाकर उसे संरक्षित करने का संकल्प लिया जाता है। यह मातृत्व और पर्यावरण दोनों को सम्मान देने का एक अभिनव तरीका है।

भा.प.नि. द्वारा क्रियान्वयन की प्रमुख बातें:

- भा.प.नि के प्रशासन विभाग ने देशभर में अपने सभी कार्यालयों और जूट क्रय केंद्रों पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किए। इससे संगठन की पर्यावरणीय जिम्मेदारी में वृद्धि हुई।
- इस पहल से भा.प.नि. के कर्मचारियों ने हजारों पौधे लगाए, जिनमें से अधिकांश आज स्वस्थ रूप से विकसित हो रहे हैं। इससे संगठन की पर्यावरणीय छवि में सुधार हुआ।
- हरियाली बढ़ने से पर्यावरण में सुधार हुआ और जैव विविधता को बढ़ावा मिला। इससे स्थानीय समुदायों में पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ी। इससे न केवल पर्यावरणीय सुधार हुआ, बल्कि कर्मचारियों और समाज में भावनात्मक संतुलन, गर्व और स्वाभिमान की भावना भी विकसित हुई।

वरिष्ठ प्रबंधन का योगदान: नेतृत्व और प्रेरणा का स्रोत

भा.प.नि. के वरिष्ठ अधिकारियों ने इन योजनाएँ को केवल एक औपचारिकता के रूप में नहीं देखा, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भाग लेकर एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने सुनिश्चित किया कि इन पहलों को केवल एकबारगी कार्यक्रम की तरह नहीं, बल्कि संगठन की दीर्घकालिक संस्कृति का हिस्सा बनाया जाए।

- भा.प.नि. के वरिष्ठ अधिकारियों ने स्वयं इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया और कर्मचारियों को प्रेरित किया। इससे कर्मचारियों में नेतृत्व की भावना और प्रेरणा का संचार हुआ।
- वरिष्ठ अधिकारियों ने यह सुनिश्चित किया कि इन पहलों को अल्पकालिक गतिविधियों के बजाय दीर्घकालिक रणनीतियों के रूप में अपनाया जाए।
- उन्होंने सुनिश्चित किया कि इन पहलों को केवल एक औपचारिकता के रूप में न देखा जाए, बल्कि इन्हें संगठन की दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा बनाया जाए। इससे संगठन की दीर्घकालिक सफलता में योगदान मिला।

निष्कर्ष:

सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन' केवल योजनाओं का पालन नहीं, बल्कि उन्हें आत्मसात कर परिणाममूलक बनाना है – और यही कार्य भारतीय पटसन निगम लिमिटेड के मानव संसाधन और प्रशासन विभाग ने उदाहरण बनकर किया है।

''iGOT कर्मयोगी प्रशिक्षण' के माध्यम से कर्मचारी विकास और 'एक पेड़ माँ के नाम' के माध्यम से सामाजिक भावनात्मक जुड़ाव और पर्यावरण संरक्षण – दोनों में भा.प.नि. ने अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

पेड़ लगाने की आवश्यकता

दीनी मजूमदार
पति : संदीपन रॉय चौधरी
कनिष्ट सहायक
प्रधान कार्यालय कोलकाता

कल्पना कीजिए कि आप एक ऐसी दुनिया में जागते हैं जहाँ हवा ताज़ा हो, गर्मी असहनीय न हो, और प्रकृति आधुनिक जीवन के साथ सामंजस्य में जी रही हो। सुनने में आदर्श लगता है, है ना? लेकिन आज की तेज़ रफ्तार और कंक्रीट से भरी दुनिया में हरियाली को अक्सर तरक्की के लिए कुर्बान कर दिया जाता है। क्या हो अगर हम कहें कि पेड़ लगाना सिर्फ प्रकृति के लिए नहीं, बल्कि हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी को बेहतर बनाने के लिए भी ज़रूरी है?

पेड़ केवल समय के मूक दर्शक नहीं होते; वे हमारे ग्रह के फेफड़े हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, ऑक्सीजन छोड़ते हैं, और प्राकृतिक वायु शोधक की तरह काम करते हैं, जो हमारे भीड़-भाड़ वाले शहरों से हानिकारक प्रदूषकों को छानते हैं। उनकी जड़ें मिट्टी को जोड़कर रखती हैं, जिससे कटाव रुकता है, और उनकी छाँव हमारे तपते हुए शहरों को राहत देती है। हर एक पेड़ जो लगाया जाता है, वह हमारे शहरों को रहने लायक और पर्यावरण को अधिक सहनशील बनाने की दिशा में एक कदम होता है।

पर्यावरणीय प्रभाव से परे, पेड़ आधुनिक जीवन के लिए भी सीधे लाभ देते हैं। पेड़ों से सजी सड़कें शहरी गर्मी को कम करती हैं, जिससे यात्रा और बाहरी गतिविधियाँ अधिक आरामदायक हो जाती हैं। शहरों में हरित स्थान मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं, स्क्रीन, शोर और तनाव से राहत दिलाते हैं। आर्थिक रूप से भी, वृक्षारोपण वानिकी, कृषि और इको-टूरिज्म जैसी उद्योगों को सहयोग करता है, यह साबित करता है कि हरियाली सिर्फ सुंदर ही नहीं, बल्कि मूल्यवान भी है।

दूसरी ओर, पेड़ न लगाना और अत्यधिक वनों की कटाई गंभीर परिणाम ला सकती है। पेड़ों के बिना वायु प्रदूषण और भी बढ़ जाता है, जिससे विशेषकर शहरों में, जहाँ पहले से ही स्मॉग एक रोज़ की समस्या है, श्वसन संबंधी बीमारियाँ बढ़ती हैं। मिट्टी का कटाव कृषि उत्पादकता को घटाता है, जिससे भोजन महँगा और दुर्लभ हो जाता है। वनों की कटाई पारिस्थितिक तंत्र को बाधित करती है, वन्यजीवों को विलुप्ति की ओर ले जाती है, और प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ देती है। साथ ही, पेड़ों की कमी जलवायु परिवर्तन को तेज करती है, जिससे हीटवेव, अनियमित मौसम और चरम तूफ़ान जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं, जो हमारी दैनिक ज़िंदगी को अस्त-व्यस्त कर देती हैं।

तो फिर हमें क्या रोक रहा है? एक पेड़ लगाना न तो बहुत अधिक समय माँगता है और न ही विशेष कौशल। यह उतना सरल हो सकता है जितना कि अपनी बालकनी में एक गमला रखना, शहरी हरियाली परियोजनाओं का समर्थन करना, या सामुदायिक वृक्षारोपण अभियानों में भाग लेना। चाहे वह एक छोटा पौधा हो या एक बड़े पैमाने पर वनीकरण परियोजना, हर कदम हमारे जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में मायने रखता है।

आइए अब शब्दों को कर्म में बदलें। आज ही एक पेड़ लगाएँ—सिर्फ प्रकृति के लिए नहीं, बल्कि स्वच्छ हवा, ठंडे शहरों और एक स्वस्थ भविष्य के लिए। हरियाली भरा कल, हमारे आज के चुनावों से शुरू होता है।

अमित कर्मकार
स. प्र. (सू. प्रौ.)
प्रधान कार्यालय - कोलकाता

धरती पर स्वर्ग: जम्मू और कश्मीर की यात्रा

पिछले साल, मुझे भारत के सबसे मनमोहक स्थलों में से एक – जम्मू और कश्मीर – की यात्रा करने का सौभाग्य मिला। अक्सर "धरती का स्वर्ग" कहे जाने वाला यह क्षेत्र अपनी प्रतिष्ठा के हर पहलू पर खरा उतरता है। मेरी यात्रा मुझे श्रीनगर, सोनमर्ग, गुलमर्ग और पहलगाम के मनमोहक परिदृश्यों से होकर ले गई, जिनमें से प्रत्येक अपने अनूठे आकर्षण और सुंदरता से परिपूर्ण है।

मेरी यात्रा की शुरुआत ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर से हुई, जो अपनी शांत डल झील और खूबसूरत हाउसबोट के लिए प्रसिद्ध है। तैरते बगीचों और कमल के फूलों से घिरी झील के उस पार पारंपरिक शिकारे पर सैर करना, किसी स्वप्नलोक में खो जाने जैसा था। मुगल उद्यान – शालीमार बाग, निशात बाग और चश्मे शाही – अपने सीढ़ीदार लॉन, जीवंत फूलों और झरनों से अतीत की कलात्मकता को दर्शाते हैं। श्रीनगर के चहल-पहल भरे बाज़ारों में घूमते हुए, मैंने रंग-बिरंगे कश्मीरी हस्तशिल्प, कालीन और केसर की खुशबू का आनंद लिया।

श्रीनगर से, मैं सोनमर्ग गया, जिसे "सोने का मैदान" कहना बिलकुल सही होगा। बर्फ से ढकी चोटियाँ और सड़क के किनारे बहती नदियाँ, यह सफ़र अपने आप में अद्भुत था। वहाँ पहुँचकर, धूप में चमकते अल्पाइन घास के विशाल मैदानों ने मेरा स्वागत किया। सिंध नदी घाटी में शान से बहती थी, और दूर-दूर तक फैले ग्लेशियर इस मनोरम दृश्य में चार चाँद लगा रहे थे। यह बस खड़े होकर प्रकृति की भव्यता में डूबने के लिए एक आदर्श जगह थी।

मेरी यात्रा का अगला पड़ाव गुलमर्ग था, जो एक प्रमुख स्की स्थल के रूप में जाना जाता है। बर्फीले मौसम के अलावा भी, गुलमर्ग अपने हरे-भरे जंगली फूलों से ढके घास के मैदानों के साथ मनमोहक था। सबसे खास था गोंडोला की सवारी, जो दुनिया की सबसे ऊँची केबल कारों में से एक है, जो मुझे अफरवत चोटी तक ले गई। ऊपर से मनोरम दृश्य - क्षितिज में लुप्त होते अंतहीन पहाड़ - मुझे मौन विस्मय में डाल गए। गुलमर्ग सिर्फ़ दर्शनीय स्थलों के बारे में नहीं था; यह हिमालय की गोद में बसे होने के रोमांच का अनुभव करने के बारे में था।

आखिरकार, मैं लिद्दर नदी के किनारे बसे एक अनोखे शहर पहलगाम गया। पहलगाम शांति और सुकून से भरपूर था। घने देवदार के जंगलों और बर्फ से ढके पहाड़ों से घिरा, यह गुलमर्ग के साहसिक माहौल के बिल्कुल विपरीत था। मैंने नदी के किनारे टहलते हुए, कलकल करते पानी की आवाज़ सुनते हुए और ठंडी पहाड़ी हवा में साँस लेते हुए समय बिताया। बेताब घाटी, अपनी हरी-भरी हरियाली और सिनेमाई सुंदरता के साथ, मानो किसी जीवंत पेंटिंग में समा गई हो।

जम्मू और कश्मीर का हर गंतव्य सुंदरता की एक नई परत उकेरता था – श्रीनगर का आकर्षण, सोनमर्ग के सुनहरे घास के मैदान, गुलमर्ग की रोमांचकारी ऊँचाइयाँ और पहलगाम की शांति। इन सबने मिलकर अनुभवों की एक अविस्मरणीय ताना-बाना बुना। नज़ारों के अलावा, कश्मीरी लोगों की गर्मजोशी, उनका आतिथ्य और उनकी समृद्ध संस्कृति ने इस यात्रा को वाकई खास बना दिया।

जम्मू और कश्मीर की यात्रा सिर्फ़ एक छुट्टी से कहीं बढ़कर थी – यह प्रकृति की कविता में डूबने जैसा था। इस इलाके की खूबसूरती आज भी मेरी यादों में गूंजती रहती है, मुझे याद दिलाती है कि सदियों से इसे स्वर्ग क्यों कहा जाता रहा है। मैं न सिर्फ़ तस्वीरें लेकर घर लौटा, बल्कि शांति, आश्चर्य और कृतज्ञता से भरा दिल भी लेकर लौटा।

राजेश कुमार चौधरी
कनिष्ठ सहायक
कोलकाता आरएलडी

भविष्य में जूट के रेशे का महत्व

जूट का रेशा एक प्राकृतिक और बायोडिग्रेडेबल सामग्री है, जिसे विभिन्न प्रकार के उत्पादों में उपयोग किया जाता है। यह रेशा विशेष रूप से कृषि आधारित देशों में उगाया जाता है और इसका उपयोग कपड़े, बैग, रस्सी, चटाई और अन्य कई वस्तुओं में किया जाता है। आज के समय में, जब पर्यावरणीय संकट और प्लास्टिक प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जूट के रेशे का महत्व और भी बढ़ गया है। भविष्य में यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, क्योंकि यह न केवल पर्यावरण के लिए फायदेमंद है, बल्कि यह आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी लाभकारी साबित हो सकता है।

जूट के रेशे की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पूरी तरह से प्राकृतिक और बायोडिग्रेडेबल होता है, जिसका मतलब है कि यह आसानी से नष्ट हो सकता है और पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचाता। जबकि प्लास्टिक की वस्तुएं सैकड़ों सालों तक नष्ट नहीं होतीं और पर्यावरण में प्रदूषण फैलाती हैं, जूट के उत्पाद प्रदूषण को कम करने में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, जूट का रेशा रीसायकल किया जा सकता है और यह प्राकृतिक संसाधन के रूप में भूमि की उर्वरक क्षमता को बढ़ाता है।

आजकल जूट के रेशे से बने बैग, कपड़े, और अन्य उत्पादों का उपयोग बढ़ रहा है। लोग धीरे-धीरे प्लास्टिक के बजाय जूट के उत्पादों को पसंद कर रहे हैं, क्योंकि यह पर्यावरण के अनुकूल हैं और स्वास्थ्य के लिए भी सुरक्षित होते हैं। जूट के बैग का उपयोग विशेष रूप से शॉपिंग बैग के रूप में किया जाता है, जो प्लास्टिक बैग के मुकाबले अधिक टिकाऊ होते हैं और उन्हें बार-बार इस्तेमाल किया जा सकता है।

इसके अलावा, जूट की खेती से किसानों को आर्थिक लाभ भी होता है। भारत जैसे विकासशील देशों में जहाँ कृषि मुख्य उद्योग है, जूट की खेती किसानों के लिए एक अच्छा आय स्रोत बन सकती है। जूट की फसल जल्दी उगती है और कम लागत में उगाई जा सकती है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि होती है। जूट उद्योग के बढ़ने से रोजगार के नए अवसर भी पैदा होते हैं, जो समाज के लिए फायदेमंद होते हैं।

भविष्य में, जब प्रदूषण और पर्यावरणीय संकट एक गंभीर समस्या बन चुका है, जूट के रेशे का महत्व और भी बढ़ेगा। अगर हम जूट के उपयोग को बढ़ावा देते हैं, तो यह न केवल पर्यावरण की रक्षा करेगा, बल्कि यह विकासशील देशों में किसानों की आर्थिक स्थिति को भी सुधारने में मदद करेगा। इसलिए, हमें जूट के रेशे के महत्व को समझते हुए इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए और भविष्य को सुरक्षित और हरित बनाना चाहिए।

हाथ से लिखे गए पत्रों का जादू - एक युग का अंत

प्रियंका मोहन्ती
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

80 और 90 के दशक में जन्मे लोग ने रोटरीफोन से स्मार्टफोन, टाइपराइटर से वर्ड प्रोसेसर के संक्रमण को देखा है। इस समूह के लोग कागज से पेपरलेस युग में चले गए हैं। लेकिन हस्तलिखित पत्र/नोट्स की जादू बेजोड़ है।

आप कल्पना कर सकते हैं कि व्यक्ति अपनी व्यस्तता में से कीमती समय निकालकर आपके बारे में सोच रहा था । यह अपने स्मार्टफोन में कुछ शब्द टाइप करने के समान नहीं है। एक टेक्स्ट संदेश में कोई व्यक्तिगत स्पर्श नहीं होता। यह तात्कालिक संदेश या वीडियो कॉल का युग नहीं था। पत्रों को सावधानीपूर्वक लिखा जाता था जबकि टेक्स्ट संदेश तात्कालिक लगते हैं। लोग महीनों तक अपने प्रियजनों से संदेश मिलने का इंतजार करते थे। हम विशेष अवसरों पर शुभकामना पत्र भेजते थे। एक पत्र प्राप्त करना एक विशेष अवसर था। संबंध पत्रों के माध्यम से जीवित रहते थे।

शब्द आपको प्रेरित कर सकते हैं, आपको हँसाने का काम कर सकते हैं, या आपके अंदर हजारों भावनाएँ उत्पन्न कर सकते हैं। और आप अपने शब्दों की जादूगरी से दूसरों को मंत्रमुग्ध कर सकते हैं। आप शब्दों को देखते हैं और भावनाओं को महसूस करते हैं। आप शब्दों के माध्यम से दृश्य, माहौल, व्यक्ति; उसके शब्दों के माध्यम से उसके भाव को कल्पना कर सकते हैं। क्या पत्र जल्दी लिखा गया था या ध्यानपूर्वक तैयार किया गया था? क्या यह भाषा आभूषणात्मक थी? क्या स्वर आकस्मिक था या औपचारिक? हम उसके लेखन से लेखक का अंदाजा लगा सकते थे।

उन दिनों, हस्तलेखन एक व्यक्तित्व विशेषता होती थी। हस्ताक्षर विश्लेषण या ग्राफोलॉजी में लेखन की भौतिक विशेषताओं और पैटर्नों की जांच करना शामिल है ताकि लेखक के व्यक्तित्व लक्षणों और मनोवैज्ञानिक स्थिति के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सके। यह प्रथा इस विश्वास पर आधारित है कि हस्ताक्षर लेखक के अवचेतन मन को दर्शाता है और उनके चरित्र के पहलुओं, जैसे कि भावनात्मक स्थिरता, बुद्धिमत्ता, और अंतरव्यक्तिगत कौशल, को प्रकट कर सकता है।

पोस्ट ऑफिस और पोस्ट मैन प्रत्येक क्षेत्र और गली में एक विशेष स्थान रखते थे। डाक टिकट संग्रह करना एक शौक हुआ करता था। एक टेलीग्राम का मतलब था एक आपात समाचार। लेकिन अब टेलीग्राम, पंजीकृत डाक आदि भारतीय डाक द्वारा बंद कर दिए गए हैं। लोग पत्रों के माध्यम से पेन फ्रेंड्स/दोस्त बनाने के आदी थे, कुछ ऐसा जिस पर इस पीढ़ी के लोग शायद हंसेंगे।

हम एक हस्तलिखित युग के अंत में पहुंच चुके हैं। ईमेल और टेक्स्ट हर दिन मिटा दिए जाते हैं लेकिन पत्रों को जीवन भर के लिए संजोया जाता था। आने वाली पीढ़ी कभी भी उस जादू का अनुभव नहीं करेगी जो हमें अक्षरों के माध्यम से हुआ है। एक पत्र की खुशबू, एक पत्र के पीछे की भावना, इन चीजों की अपनी एक कहानी है। हजारों टेक्स्ट संदेश कभी भी कुछ हस्तलिखित नोट्स की बराबरी नहीं कर सकते। आज भी आप पुरानी पीढ़ी के लोगों की किताबों या कपड़ों में या अलमारी में छुपे हुए पत्र पा सकते हैं। पत्र जीवन के लिए एक स्मृति चिन्ह हैं। यह अनंत के लिए एक यादगार है।

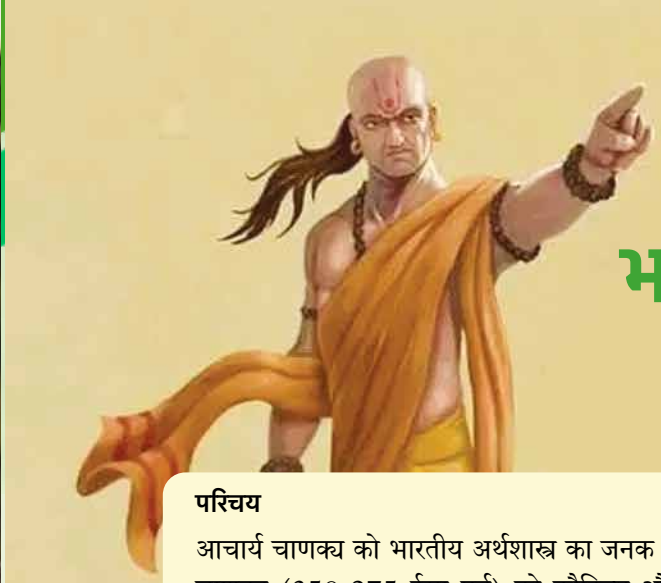

भारतीय अर्थशास्त्र के जनक

परिचय

आचार्य चाणक्य को भारतीय अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है। चाणक्य (350-275 ईसा पूर्व) को कौटिल्य और विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ और उन्होंने अपनी शिक्षा तक्षशिला (पाकिस्तान) में प्राप्त की थी। वह मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में प्रधानमंत्री थे। सम्राट चंद्रगुप्त के सलाहकार के रूप में काम किया और मगध क्षेत्र में पाटलिपुत्र में चंद्रगुप्त को अपनी शक्तियों को मजबूत करने में मदद की।

बचपन

बचपन में चाणक्य ने पूरे वेदों का अध्ययन किया और राजनीति के बारे में सीखा। उनके पास एक ज्ञान दात था। उस समय एक आम धारणा थी कि ज्ञान दात होना राजा बनने का संकेत है। उनकी माँ एक ज्योतिषी को यह कहते हुए सुनकर डर गई कि "वह बड़ा होकर राजा बनेगा और राजा बनने के बाद उसे भूल जाएगा"। उस समय चाणक्य ने अपने ज्ञान दात तोड़ दिए और अपनी माँ से वादा किया कि "माँ, चिंता मत करो। मैं तुम्हारी अच्छी तरह से देखभाल करूँगा।"

नीरज कुमार
लेखाकार
क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी

चन्द्रगुप्त का उदय

चाणक्य को चंद्रगुप्त पर बहुत गर्व था। चाणक्य ने उन्हें 7 साल तक कठोर सैन्य प्रशिक्षण दिया। चाणक्य के मार्गदर्शन में, चंद्रगुप्त एक सक्षम योद्धा बन गया। चाणक्य ने बहुत चतुर और गणनात्मक चाल चली और कुछ राजाओं को जहर देकर मरवाया था। किंवदंती के अनुसार, चाणक्य बहुत कम उम्र से ही कुछ लड़कियों को भोजन में जहर की छोटी खुराक मिलाते थे, और उन्हें विषकन्या भी कहा जाता था। लड़कियों का एक चुंबन दुश्मन के राजा को मारने के लिए पर्याप्त था। सही समय देखकर चंद्रगुप्त ने मगध की राजधानी पाटलिपुत्र पर हमला किया और धनानंद को सफलतापूर्वक मार डाला। इस तरह चाणक्य का अखंड भारतीय साम्राज्य का सपना सच हो गया। चंद्रगुप्त ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

चाणक्य के जीवन की कुछ विचारधाराएँ:

- "मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान होता है।"

यह धारणा व्यक्तियों को उनकी परवरिश या सामाजिक प्रतिष्ठा की परवाह किये बिना उत्कृष्टता के लिये प्रयास करने और समाज में सकारात्मक योगदान देने हेतु प्रोत्साहित करती है।

- "कोई काम शुरू करने से पहले हमेशा अपने आप से तीन प्रश्न पूछें- मैं यह क्यों कर रहा हूँ?, इसके परिणाम क्या हो सकते हैं?, और क्या मैं सफल होऊंगा? जब गहराई से सोचने पर इनके संतोषजनक उत्तर मिल जाएँ, तभी आगे बढ़ें।"

यह दृष्टिकोण विचारशील निर्णय लेने को बढ़ावा देता है और सकारात्मक परिणामों की संभावना बढ़ाता है।

- "दूसरों की गलतियों से सीखें- आप उन सभी गलतियों को स्वयं करने के लिये पर्याप्त समय तक जीवित नहीं रह सकते हैं।

यह व्यक्तियों को दूसरों के अनुभवों से मिले सबक के प्रति चौकस तथा ग्रहणशील होने के लिये प्रोत्साहित करता है। ऐसा करने से हम व्यक्तिगत रूप से नकारात्मक परिणामों का अनुभव किये बिना ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं।

- "भले ही कोई साँप ज़हरीला न हो, फिर भी उसे ज़हरीला होने का दिखावा करना चाहिये।"

यह विचार बताता है कि किसी की वास्तविक क्षमताओं की परवाह किये बिना, सामर्थ्य तथा लचीलेपन की छवि विकसित करना फायदेमंद हो सकता है।

- "एक बार जब आप कोई कार्य शुरू कर दें, तो असफलता से न डरें । जो लोग ईमानदारी से काम करते हैं वे अधिक खुश रहते हैं।"

यह किसी के काम में दृढ़ता और समर्पण के महत्त्व पर ज़ोर देता है। चाणक्य के अनुसार, जो लोग लगन और ईमानदारी से काम करते हैं उन्हें ही सबसे अधिक प्रसन्नता होती है।

बच्चों में नैतिक मूल्य

रमेश कुमार
मुख्य प्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय

समाज की नींव उसके नागरिक होते हैं, और नागरिकों के निर्माण में बचपन की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। बचपन वह समय होता है जब व्यक्तित्व का निर्माण होता है और जीवन के लिए मूलभूत संस्कार दिए जाते हैं। बच्चों में नैतिक गुण जैसे ईमानदारी, करुणा, संयम, सहनशीलता, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा आदि न केवल उनके चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं, बल्कि एक स्वस्थ, सशक्त एवं सुसंस्कृत समाज की स्थापना में भी अहम भूमिका निभाते हैं। नैतिक मूल्य बच्चों के जीवन में वह दीपक होते हैं, जो उन्हें अंधेरे रास्तों में भी सही दिशा दिखाते हैं। इसलिए बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करना समाज, परिवार और राष्ट्र की जिम्मेदारी है। आज के भौतिकवादी युग में जब नैतिकता का पतन स्पष्ट दिखाई दे रहा है, तब बच्चों में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है।

नैतिक मूल्य वे आचार-विचार और आदर्श होते हैं, जो व्यक्ति को सही और गलत का भेद सिखाते हैं। ये मूल्य किसी भी व्यक्ति को एक अच्छा इंसान बनाते हैं। जैसे– ईमानदारी, सहानुभूति, करुणा, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, आदर, क्षमा, धैर्य और सहयोग। जब ये गुण बचपन से ही बच्चों में विकसित होते हैं, तो वे बड़े होकर समाज के अच्छे नागरिक बनते हैं।

बचपन में मन अत्यंत कोमल और ग्रहणशील होता है। जो भी अनुभव और ज्ञान इस समय मिलता है, वह जीवन भर साथ रहता है। यदि इस अवस्था में बच्चों को अच्छे संस्कार और नैतिक शिक्षा दी जाए, तो वे न केवल अपने जीवन को सफल बना सकते हैं, बल्कि समाज के लिए भी उपयोगी बन सकते हैं। बच्चों के लिए नैतिक मूल्य जीवन के दिशा-निर्देशक की भूमिका निभाते हैं। ये उन्हें सही और गलत में अंतर करना सिखाते हैं, दूसरों के प्रति सहानुभूति व आदर का भाव जागृत करते हैं और समाज में एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में उन्हें स्थापित करते हैं।

1. चरित्र निर्माण: नैतिक मूल्य बच्चों के चरित्र को मजबूती प्रदान करते हैं। एक अच्छा चरित्र जीवन भर व्यक्ति के साथ रहता है।
2. सामाजिक समरसता: नैतिक मूल्यों से युक्त बच्चे समाज में सहयोग, सामंजस्य और शांति का वातावरण निर्मित करते हैं।
3. संवेदनशीलता का विकास: करुणा, दया, और सहानुभूति जैसे मूल्य बच्चों को संवेदनशील बनाते हैं, जिससे वे दूसरों की भावनाओं को समझते हैं।
4. भविष्य की नींव: आज के बच्चे कल के नेता, शिक्षक, डॉक्टर, वैज्ञानिक और नागरिक होंगे। अगर वे नैतिकता से युक्त होंगे, तो देश का भविष्य उज्ज्वल होगा।

बच्चे जैसा देखते हैं, वैसा ही सीखते हैं। यदि समाज में ईमानदारी, सेवा भावना और सदाचार हो, तो बच्चों के व्यवहार पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। बच्चों में नैतिक मूल्यों का समावेश कोई एक दिन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि निरंतर प्रयास का परिणाम होता है।

1. परिवार की भूमिका: परिवार ही बच्चे की पहली पाठशाला होता है। माता-पिता को अपने व्यवहार और आचरण द्वारा बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाना चाहिए। उदाहरण स्वरूप, ईमानदारी, समय की पाबंदी, दूसरों की मदद करना आदि। यदि परिवार में प्रेम, आदर, अनुशासन और सहयोग का वातावरण हो, तो बच्चे भी वैसा ही व्यवहार सीखते हैं।
2. शिक्षा प्रणाली: शिक्षक न केवल पढ़ाई कराते हैं, बल्कि बच्चों के चरित्र निर्माण में भी योगदान देते हैं। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का भाग बनाना चाहिए। शिक्षकों को छात्रों के साथ संवाद के माध्यम से नैतिक विषयों की व्याख्या करनी चाहिए।
3. कहानियाँ और साहित्य: बच्चों को नैतिक मूल्यों से युक्त कहानियाँ, नीतिकथाएँ, धार्मिक ग्रंथों की शिक्षाएँ आदि सुनाना उन्हें नैतिकता की ओर प्रेरित करता है। पंचतंत्र, जातक कथाएँ, रामायण, महाभारत जैसी कहानियाँ बच्चों को नैतिकता और जीवन के मूल्यों की शिक्षा देती हैं। इनसे बच्चे जीवन के कठिन निर्णय लेना और अपने कर्तव्यों को समझना सीखते हैं।
4. खेल और समूह गतिविधियाँ: टीम वर्क, अनुशासन, नेतृत्व, सहिष्णुता

जैसे मूल्य खेलों के माध्यम से बच्चों में सहज रूप से डाले जा सकते हैं।

5. प्रेरणा स्रोत: बच्चों को ऐसे महान व्यक्तित्वों की जीवनी से परिचित कराना चाहिए, जिन्होंने अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को सर्वोच्च रखा — जैसे महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, ए पी जे अब्दुल कलाम आदि।

बच्चों में जब नैतिकता का विकास होता है, तो उसका सकारात्मक प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है।

1. स्वस्थ मानसिकता: नैतिकता से युक्त बच्चे मानसिक रूप से संतुलित, आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर, ईमानदार, सहनशील और सकारात्मक होते हैं।
2. सामाजिक सौहार्द: ऐसे बच्चे समाज में शांति, सहयोग और एकता का वातावरण बनाते हैं। बच्चे सहानुभूति और करुणा के साथ समाज से जुड़ते हैं।
3. राष्ट्र निर्माण: नैतिक नागरिक ही देश की प्रगति और स्थायित्व में योगदान करते हैं।
4. मानवता का विकास: नैतिक मूल्य बच्चों को एक अच्छा इंसान बनने में सहायता करते हैं, जिससे पूरी मानवता को लाभ मिलता है।

आज के आधुनिक युग में नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। टेलीविजन, मोबाइल, इंटरनेट और सामाजिक मीडिया के प्रभाव से बच्चे बाहरी दिखावे, प्रतिस्पर्धा और तात्कालिक सुखों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप उनमें झूठ बोलना, चोरी करना, गुस्सा करना, असम्मान करना और अनुशासनहीनता जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, जो उनके भविष्य के लिए घातक सिद्ध हो सकती हैं।

बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास केवल शिक्षा प्रणाली की ही नहीं, बल्कि पूरे समाज की जिम्मेदारी है। बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन के लिए आवश्यक है, बल्कि समाज और राष्ट्र के हित में भी अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए परिवार, विद्यालय, समाज और सरकार सभी को मिलकर प्रयास करना चाहिए। यदि हम अपने बच्चों को नैतिकता, प्रेम, सहिष्णुता और सेवा जैसे गुणों से सम्पन्न बनाएं, तो एक बेहतर समाज, और एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है। यह आवश्यक है कि हम सब मिलकर बच्चों के कोमल मन में अच्छे विचारों और नैतिक आदर्शों के बीज बोएं, ताकि वे कल को एक उज्ज्वल, सशक्त और संवेदनशील नागरिक बन सकें।

कार्य-जीवन संतुलन का महत्व

रवि चौरसिया
प्रबंधक (मानव संसाधन)
प्रधान कार्यालय - कोलकाता

आज की तेज़ रफ़्तार और प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में कार्य-जीवन संतुलन (Work-Life Balance) बनाए रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। कार्य और निजी जीवन के बीच संतुलन न केवल व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी है, बल्कि यह कार्यक्षमता और उत्पादकता को भी बढ़ाता है।

जब व्यक्ति अपने काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच उचित तालमेल नहीं बना पाता, तो उसका तनाव बढ़ जाता है, जिससे अवसाद, चिंता और थकान जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसके विपरीत, जब व्यक्ति को अपने परिवार, शौक और आराम के लिए पर्याप्त समय मिलता है, तो वह ज्यादा खुश, ऊर्जावान और प्रेरित महसूस करता है।

कार्य-जीवन संतुलन से जुड़े कुछ मुख्य लाभ इस प्रकार हैं:

1. मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार – समय पर आराम और पर्याप्त नींद लेने से व्यक्ति की ऊर्जा बनी रहती है और वह बीमारियों से दूर रहता है।

2. उत्पादकता में वृद्धि – संतुलित जीवन जीने वाला कर्मचारी अपने कार्य में ज्यादा ध्यान केंद्रित कर पाता है, जिससे कार्य की गुणवत्ता बेहतर होती है।

3. संतुष्ट और खुशहाल जीवन – जब व्यक्ति अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिता पाता है, तो उसका सामाजिक जीवन बेहतर होता है और वह अधिक संतुष्ट महसूस करता है।

4. तनाव में कमी – जब काम का बोझ अत्यधिक न हो और समय का सही प्रबंधन हो, तो तनाव कम होता है।

5. पेशेवर और व्यक्तिगत रिश्तों में मजबूती – संतुलन बनाए रखने से व्यक्ति अपने सहकर्मियों और परिवार के साथ अच्छे संबंध बना पाता है।

निष्कर्षतः कार्य-जीवन संतुलन केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि एक आवश्यकता है। यह न केवल व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को समृद्ध करता है, बल्कि उसकी कार्यक्षमता और समर्पण को भी बढ़ाता है। संस्थानों को भी चाहिए कि वे कर्मचारियों को लचीलापन (flexibility) और सहयोग प्रदान करें, ताकि एक स्वस्थ और सकारात्मक कार्य वातावरण का निर्माण हो सके।

बिजय साहू
प्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

भारत में आर्थिक सुधारों के जनक- डॉ. मनमोहन सिंह

जन्म व शिक्षा

डॉ. मनमोहन सिंह का जन्म 26 सितंबर, 1932 को अविभाजित भारत (पाकिस्तान) के पंजाब में हुआ था। देश के विभाजन के बाद मनमोहन सिंह का परिवार भारत चला आया। यहाँ पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई पूरी की। बाद में वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गये, जहाँ से उन्होंने पीएच. डी. की। तत्पश्चात् उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी. फिल. किया। उन्होंने अर्थशास्त्र के अध्यापक के तौर पर पंजाब विश्वविद्यालय और बाद में दिल्ली स्कूल ऑफ इकनामिक्स में रहे। उनका निधन 26 दिसम्बर 2024 को में दिल्ली में हुआ।

महत्वपूर्ण उपलब्धियां

- 1982 : भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर
- 1985 : योजना आयोग के उपाध्यक्ष
- 1990 : भारतीय प्रधानमन्त्री के आर्थिक सलाहकार
- 1991 : नरसिंहराव के सरकार में वित्त मन्त्री व असम से राज्यसभा सांसद
- 1998 : नेता प्रतिपक्ष, राज्यसभा।
- 2001 : तीसरी बार राज्य सभा सदस्य और सदन में विपक्ष के नेता
- 2002 : सर्वश्रेष्ठ सांसद
- 2004-2014 : भारत के प्रधानमन्त्री

इसके अतिरिक्त उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व एशियाई विकास बैंक के लिये भी कई महत्वपूर्ण काम किया है।

देश में आर्थिक सुधारों की शुरुआत

डॉ. मनमोहन सिंह का सबसे बड़ा योगदान वित्त मंत्री के रूप में आर्थिक सुधारों की शुरुआत करना है। इसके तहत सरकारी नियंत्रण को कम करना, निजी क्षेत्र को आज़ादी देना, आयात शुल्क कम करना, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को बढ़ाना, औद्योगिक लाइसेंसिंग को खत्म करना, विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (FIPB) की स्थापना और स्ट्रक्चरल रिफॉर्म्स को लागू करने का फैसला लिया गया था। 1991 में आर्थिक सुधार एजेंडा, जिसमें उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण शामिल थे जिन्हें LPG सुधार कहा जाता है। सुधार प्रक्रिया ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला, जिससे विदेशी निवेश में वृद्धि हुई और अर्थव्यवस्था अधिक सेवा-उन्मुख हो गई।

प्रधानमंत्री के रूप में डॉ. मनमोहन सिंह का योगदान

भारत के प्रधानमंत्री के रूप में डॉ. मनमोहन सिंह का योगदान भारतीय राजनीति में एक विशेष स्थान रखता है। उन्होंने कई ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय लिए, जो आज इस प्रकार है:

- राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (NREGA) - इस कानून के तहत प्रत्येक ग्रामीण परिवार को 100 दिन के वेतन रोजगार की गारंटी दी गई।
- सूचना का अधिकार अधिनियम (RTI) - 2005 में सरकार ने सूचना का अधिकार अधिनियम (RTI) को लागू किया। इससे शासन में पारदर्शिता बढ़ी और सरकारी कार्यों में

जवाबदेही सुनिश्चित हुई।

- आधार कार्ड की सुविधा - डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार ने आधार परियोजना की शुरुआत की, जो नागरिकों को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करने के लिए बनाई गई थी. आधार के जरिए विभिन्न योजनाओं का लाभ सीधे उनके खाते में मिल सकता है, जिससे प्रशासनिक खर्चों में कमी आई और भ्रष्टाचार को नियंत्रित किया गया।
- प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) - सरकार ने प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (Direct Benefit Transfer) सिस्टम को लागू किया, इसके जरिए सरकारी योजनाओं के लाभ को सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में भेजा जाने लगा।
- कृषि ऋण माफी (2008) - 2008 में डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार ने कृषि ऋण माफी योजना लागू की, इस योजना ने देशभर के लाखों किसानों को राहत दी और उनके जीवन स्तर में सुधार किया।
- भारत-अमेरिका परमाणु समझौता - इस समझौते के तहत भारत को परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) से छूट मिली, जिससे भारत को परमाणु ऊर्जा के लिए अन्य देशों से यूरेनियम आयात करने की अनुमति मिली।
- डॉ. मनमोहन सिंह न केवल एक कुशल अर्थशास्त्री थे, बल्कि एक ईमानदार और दूरदर्शी राजनेता भी थे। उनकी नीतियों और योगदानों ने भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज पर गहरा प्रभाव डाला। डॉ. मनमोहन सिंह की सादगी, ईमानदारी, और आर्थिक नीतियों के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा।

संचार की कला

संचार (Communication) मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा है। यह हमारी विचारों, भावनाओं, और जानकारी को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। संचार केवल शब्दों तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें शारीरिक हाव-भाव, शरीर की भाषा, संकेतों, और आचरण का भी योगदान होता है। संचार की कला का मतलब है, विचारों और भावनाओं को प्रभावी और स्पष्ट रूप से व्यक्त करना, ताकि दूसरा व्यक्ति उन विचारों को सही तरीके से समझ सके।

संचार की कला में स्पष्टता, श्रोता की जरूरतों को समझना, सही समय पर सही शब्दों का चयन करना, और सुनने की क्षमता का होना बहुत जरूरी है। जब हम किसी से संवाद करते हैं, तो सिर्फ बोलना ही नहीं, बल्कि सही तरीके से सुनना भी जरूरी है। अगर हम सामने वाले की बात को ध्यान से सुनते हैं, तो हम उसकी भावनाओं और विचारों को समझ सकते हैं, और संवाद को और प्रभावी बना सकते हैं।

संचार की कला में सबसे महत्वपूर्ण है कि हम अपने विचारों को संक्षिप्त, सटीक और प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करें। बिना किसी अव्यक्तता के, और सामने वाले की भावना का आदर करते हुए संवाद करना, अच्छे संचार का संकेत है। यही नहीं, संचार का एक और महत्वपूर्ण पहलू है — शारीरिक भाषा। हमारी आँखों का संपर्क, चेहरा, हाथों की गतिविधियाँ और शरीर की स्थिति भी संचार में अहम भूमिका निभाती हैं।

प्रियंका स्वप्निल मोरे
लेखाकार,
कोलकाता आरएलडी

आज के डिजिटल युग में, संचार का तरीका और माध्यम बदल चुका है। सोशल मीडिया, ईमेल, और टेक्स्ट मैसेजिंग जैसे उपकरणों के माध्यम से लोग एक-दूसरे से तेजी से और अधिक तरीके से संवाद कर रहे हैं। हालांकि, वास्तविक संवाद की कला, जिसमें व्यक्ति की भावनाओं, विचारों और दृष्टिकोण को सही तरीके से व्यक्त किया जाता है, आज भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

अंततः, संचार की कला एक ऐसी क्षमता है, जिसे अभ्यास और समझ से और बेहतर बनाया जा सकता है। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन को बल्कि पेशेवर जीवन को भी प्रभावी बना सकता है।

सततता: समावेशी और उत्तरदायी विकास की दिशा में

मौतुशी चक्रवर्ती
पति – शान्तनू चक्रवर्ती
उप महाप्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

प्रस्तावना

वर्तमान समय में जब जलवायु परिवर्तन, संसाधनों की कमी और सामाजिक विषमता जैसे मुद्दे वैश्विक चिंता का विषय बन चुके हैं, "सस्टेनेबिलिटी" केवल एक वैकल्पिक विचार नहीं, बल्कि एक अनिवार्य रणनीति बन गई है। सततता का अर्थ है ऐसा विकास जो पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन बनाए रखते हुए वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करे, बिना भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों को बाधित किए।

सततता के प्रमुख स्तंभ

1. पर्यावरणीय स्थायित्व

i) नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों (सौर, पवन आदि) का उपयोग

यह स्थायित्व का मूल आधार है। पारंपरिक ऊर्जा स्रोत जैसे कोयला और पेट्रोलियम सीमित हैं और प्रदूषण फैलाते हैं।

- सौर ऊर्जा: ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सोलर पैनल से बिजली उत्पादन संभव है।
- पवन ऊर्जा: खुले क्षेत्रों में पवन चक्कियाँ स्थापित कर ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है।

ii) जल संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन और जैव विविधता की रक्षा

- जल संरक्षण: वर्षा जल संचयन, ड्रिप सिंचाई और पुनः उपयोग की तकनीकें अपनाकर जल संकट को टाला जा सकता है।
- अपशिष्ट प्रबंधन: ठोस और तरल कचरे का पृथक्करण, पुनर्चक्रण और कंपोस्टिंग से भूमि और जल स्रोतों की रक्षा होती है।
- जैव विविधता की रक्षा: स्थानीय वनस्पति और जीवों का संरक्षण पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रखता है। यह कृषि, जलवायु और आजीविका के लिए आवश्यक है।

2. सामाजिक स्थायित्व

सामाजिक स्थायित्व का अर्थ है ऐसा समाज बनाना जो न्यायपूर्ण, समावेशी और दीर्घकालिक रूप से संतुलित हो। इसके लिए सबसे पहले लैंगिक समानता, शिक्षा और स्वास्थ्य तक समावेशी पहुँच सुनिश्चित करना आवश्यक है। जब महिलाओं, लड़कियों और अन्य वंचित वर्गों को समान अधिकार और सेवाएँ मिलती हैं, तो वे न केवल अपनी क्षमता का विकास करती हैं, बल्कि पूरे समुदाय को सशक्त बनाती हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य की पहुँच केवल सेवा वितरण नहीं, बल्कि गरिमा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक गतिशीलता का आधार है। इसके साथ ही, स्थानीय समुदायों की भागीदारी और क्षमता निर्माण सामाजिक स्थायित्व को जमीनी स्तर पर मजबूत करता है। जब ग्रामवासी स्वयं योजना निर्माण, निगरानी और क्रियान्वयन में भाग लेते हैं, तो परियोजनाएँ अधिक प्रभावी और टिकाऊ बनती हैं।

3. आर्थिक और प्रशासनिक स्थायित्व

आर्थिक और प्रशासनिक स्थायित्व किसी भी परियोजना, संस्था या नीति की दीर्घकालिक सफलता की रीढ़ है। इसके लिए सबसे पहले आवश्यक है पारदर्शी निगरानी और मूल्यांकन ढांचे की स्थापना, जिससे प्रत्येक गतिविधि का प्रभाव, व्यय और परिणाम समयबद्ध रूप से मापा जा सके। ऐसे ढांचे में स्पष्ट संकेतक, नियमित रिपोर्टिंग, और स्वतंत्र मूल्यांकन शामिल होते हैं, जो जवाबदेही और सुधार की गुंजाइश को बढ़ाते हैं। इसके साथ ही, ESG (Environment, Social, Governance) मानकों के अनुरूप कार्य करना आज की वैश्विक और कॉर्पोरेट जिम्मेदारियों का अनिवार्य हिस्सा बन चुका है। पर्यावरणीय संरक्षण, सामाजिक समावेशन और सुशासन को एकीकृत दृष्टिकोण से लागू करना न केवल नैतिक रूप से उचित है, बल्कि निवेश और साझेदारी के लिए भी अनुकूल वातावरण तैयार करता है।

भारत में सततता की वर्तमान स्थिति (2025)

भारत सरकार ने सतत विकास लक्ष्यों (SDGs), CSR अधिनियम, ESG प्रकटीकरण और हरित फंडिंग योजनाओं के माध्यम से सततता को नीति स्तर पर मजबूती दी है। विभिन्न क्षेत्रों में हरित प्रौद्योगिकी, सामुदायिक निवेश और नवाचार को प्राथमिकता दी जा रही है।

निष्कर्ष

सस्टेनेबिलिटी केवल पर्यावरण की रक्षा नहीं, बल्कि एक समग्र दृष्टिकोण है जो समाज, अर्थव्यवस्था और शासन को एकीकृत करता है। जब यह स्थानीय संदर्भों के अनुरूप ढाला जाता है—जैसे महिला-केंद्रित डिजिटल सशक्तिकरण या सर्कुलर इकोनॉमी के नवाचार—तो यह न केवल प्रभावी होता है, बल्कि परिवर्तनकारी भी बनता है।

सतत विकास की राह—प्रकृति, समाज और नीति का समन्वय!

स्वतंत्रता संग्राम की विस्मृत नायिका – मातंगिनी हाजरा

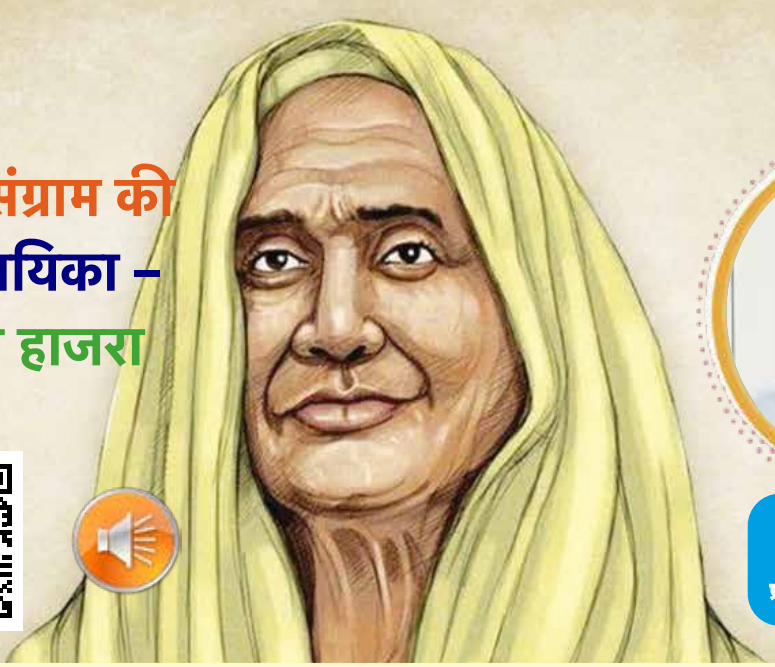

वरुण कुमार पोद्दार
लेखाकर
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

मातंगिनी हाजरा (19 अक्तूबर 1869-29 सितंबर 1942) भारत की क्रांतिकारी थी। उन्हें 'गाँधी बूढ़ी' के नाम से जाना जाता था। मातंगिनी हाजरा का जन्म पश्चिम बंगाल मिदनापुर जिले के होगला ग्राम में एक अत्यंत निर्धन परिवार में हुआ था। गरीबी के कारण 12 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह 62 वर्ष के एक विधुर, त्रिलोचन हाजरा से करा दिया गया। छः वर्ष बाद वे निःसंतान ही विधवा हो गयी। उनके पति की पहली पत्नी से उत्पन्न पुत्र उनसे बहुत घृणा करता था। अतः मातंगिनी एक अलग झोपड़ी में रहकर मजदूरी से जीवनयापन करती थीं। गांववालों के दुःख-सुख में सदा साथ रहने के कारण, वे पूरे गांव में माता के समान पूज्य हो गयीं।

1932 में गांधी जी के नेतृत्व में, देश भर में स्वाधीनता आन्दोलन शुरू हुआ। वन्दे मातरम् का नारा लगाते हुए, प्रतिदिन जुलूस निकाले जाते थे। जब ऐसा जुलूस मातंगिनी के घर के पास से निकला तो उन्होंने बंगाली परंपरा के अनुसार शंख ध्वनि से उसका स्वागत किया और जुलूस के साथ चल दी। तामलुक के कृष्णगंज बाजार में पहुंचकर एक सभा हुई। वहां मातंगिनी ने सभी के साथ स्वाधीनता संग्राम में अपना सर्वस्व देश पर समर्पित करने की शपथ ली।

17 जनवरी, 1993 को करबन्दी आन्दोलन को दबाने के लिए, बंगाल के तत्कालीन गवर्नर एण्डरसन जब तामलुक आये, तो उनके विरोध में प्रदर्शन हुआ। वीरांगना मातंगिनी हाजरा सबसे आगे काला झण्डा लिये डटी रही। वे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध नारे लगाते हुए दरबार तक जा पहुंची। इस पर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और उन्हें छः माह के सश्रम कारावास की सजा दी गई, तत्पश्चात इन्हें मुर्शिदाबाद जेल भेज दिया गया।

1942 में जब 'भारत छोड़ो आन्दोलन' ने जोर पकड़ा तो मातंगिनी ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। 08 सितंबर को तामलुक में हुए एक प्रदर्शन में पुलिस ने तीन स्वतंत्रता सेनानियों को मार दिया। लोगों ने इसके विरोध में 29 सितंबर को और भी बड़ी रैली निकालने का निश्चय किया। इसके लिए मातंगिनी ने गांव-गांव घूमकर रैली के लिए 5,000 लोगों को तैयार किया। सब दोपहर में सरकारी डाक बंगले पर पहुंचे, तभी पुलिस ने फाइरिंग शुरू कर दी। मातंगिनी एक चबूतरे पर खड़ी होकर नारे लगवा रही थी। एक गोली उनके बायें हाथ में लगी। उन्होने तिरंगे झण्डे को गिरने से पहले ही, दूसरे हाथ में ले लिया। तभी दूसरी गोली उनके दाहिने हाथ में और तीसरी उनके माथे पर लगी। मातंगिनी वहीं वीरगति को प्राप्त हो गई। इस बलिदान से पूरे क्षेत्र में इतना जोश उमड़ा कि, दस दिन के अंदर ही लोगों ने अंग्रेजों को खदेड़कर वहाँ एक स्वाधीन सरकार स्थापित कर दी, जो 21 महीने तक वहां काम करती रही।

भारत ने जब 1947 में स्वतंत्रता हासिल की, तब कोलकाता में हाजरा रोड के लंबे विस्तार सहित कई स्कूलों, कॉलोनियों और सडकों का नाम मातंगिनी हाजरा के नाम पर रखा गया। दिसंबर 1974 में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने प्रवास के समय तामलुक में मातंगिनी हाजरा की मूर्ति का अनावरण कर, उन्हें अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। स्वतंत्र भारत में कोलकाता में स्थापित किसी भी महिला की पहली मूर्ति 1977 में मातंगिनी हाजरा की थी। तामलुक में जहां वे वीरगति को प्राप्त हुई थी, उस स्थान पर भी अब एक मूर्ति है।

वर्ष 2002 में, भारत छोड़ो आंदोलन के साठ वर्ष और तामलुक राष्ट्रीय सरकार के गठन की स्मृति में, डाक टिकटों की एक श्रृंखला के हिस्से के रूप में, भारतीय डाक विभाग ने मातंगिनी हाजरा के चित्र वाला पांच रुपए का डाक टिकट जारी किया। वर्ष 2015 में, इनके नाम पर तामलुक, पूर्वी मेदिनीपुर में शहीद मातंगिनी हाजरा गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वुमेन की स्थापना की गई।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) – भविष्य की बुद्धि

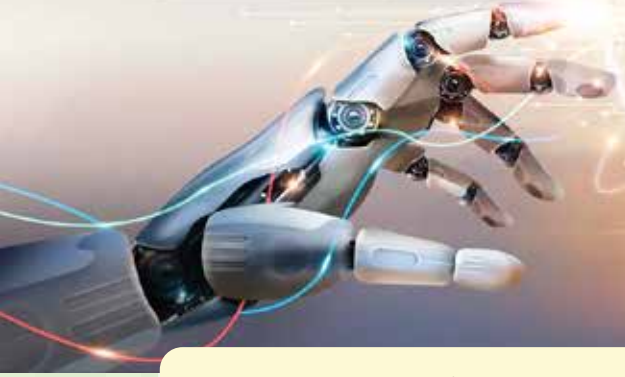

संदीपन रॉय चौधुरी
कनिष्ठ सहायक
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (Artificial Intelligence - AI) आज के युग की सबसे क्रांतिकारी और प्रभावशाली तकनीक है। यह कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जिसमें मशीनों को इंसानों की तरह सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता दी जाती है। सरल शब्दों में कहें तो एआई वह तकनीक है जो मशीनों को "बुद्धिमान" बनाती है।

AI का इतिहास और विकास

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विचार 1950 के दशक में सामने आया, जब वैज्ञानिकों ने सोचना शुरू किया कि क्या मशीनें इंसानों की तरह सोच सकती हैं। 1956 में डार्टमाउथ सम्मेलन में AI को एक अलग क्षेत्र के रूप में मान्यता मिली। शुरुआती वर्षों में यह एक सीमित प्रयोग था, लेकिन आज AI का उपयोग जीवन के लगभग हर क्षेत्र में हो रहा है।

AI कैसे काम करता है

AI मशीनों को डेटा के माध्यम से सिखाता है। यह मशीन लर्निंग (Machine Learning) और डीप लर्निंग (Deep Learning) जैसे तकनीकों का उपयोग करता है, जिनसे मशीनें अनुभव से सीखती हैं और अपने निर्णयों को बेहतर बनाती हैं। उदाहरण के लिए, गूगल सर्च, फेस रिकग्निशन, वॉयस असिस्टेंट (जैसे Siri और Alexa), और चैटबॉट्स AI के बेहतरीन उदाहरण हैं।

AI के लाभ

AI ने हमारी ज़िंदगी को आसान बना दिया है। चिकित्सा क्षेत्र में यह रोगों की सटीक पहचान और इलाज में सहायक है। शिक्षा में AI आधारित टूल्स छात्रों को व्यक्तिगत रूप से गाइड करते हैं। बैंकिंग, कृषि, ट्रैफिक नियंत्रण, साइबर सुरक्षा, और यहां तक कि अंतरिक्ष अनुसंधान में भी AI का उपयोग हो रहा है। AI से काम की गति और गुणवत्ता दोनों में सुधार हुआ है।

चुनौतियाँ और जोखिम

जहाँ AI के अनेक फायदे हैं, वहीं इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं। सबसे बड़ी चिंता यह है कि AI के कारण इंसानों की नौकरियाँ कम हो सकती हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ दोहराव वाले कार्य होते हैं। साथ ही, यदि AI का दुरुपयोग किया गया, जैसे कि हथियारों में इसका प्रयोग, तो यह मानवता के लिए बड़ा खतरा बन सकता है। AI से जुड़ी नैतिकता, गोपनीयता और निर्णय लेने की पारदर्शिता पर भी प्रश्न उठते हैं।

AI का भविष्य

AI का भविष्य उज्जवल है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि इसका प्रयोग सही दिशा में हो। इसके लिए हमें जिम्मेदार डेवलपमेंट और उपयोग की आवश्यकता है। साथ ही, सरकारों और संगठनों को AI की निगरानी और नीति निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जीवन में एक नई क्रांति है। यह हमारे कार्य करने के ढंग को बदल रही है और भविष्य को अधिक स्मार्ट, सुरक्षित और सुविधाजनक बना रही है। हमें इसका उपयोग समझदारी और जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए ताकि यह मानवता के कल्याण का माध्यम बने।

गलत होने की कीमत कुछ न करने की कीमत से कम है

चाँदनी पोद्दार
पति – वरुण कुमार पोद्दार, लेखाकार
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

"गलत होने की कीमत कुछ न करने की कीमत से कम है" यह कथन जीवन में साहस, प्रयास और जोखिम लेने के महत्व को रेखांकित करता है। यह हमें सिखाता है कि गलतियां करना या असफल होना उतना हानिकारक नहीं है जितना निष्क्रिय रहना और अवसरों को खो देना। आधुनिक युग में जहां अनिश्चिताएं और चुनौतियां हर कदम पर मौजूद हैं, यह कथन हमें निष्क्रियता के डर को त्यागकर कार्य करने कि प्रेरणा देता है। गलतियां हमें अनुभव और सीख देती हैं, जबकी कुछ न करना हमें ठहराव और पछतावे की ओर ले जाता है।

यह कथन कर्म और प्रयास की महता को बताता है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते है "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" अर्थात कर्म करो फल की चिंता मत करो यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि कार्य करना और गलतियां करना मानव के स्वभाव का एक हिस्सा है, लेकिन कुछ ना करना तो मनुष्य के आत्म ज्ञान को ही खत्म कर देता है। गलत होने का डर लोगों को नई चीजें आजमाने से रोकता है।

हार्वर्ड की मनोवैज्ञानिक एमी एंडरसन ने "मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की अवधारणा दी, जिससे वो बताती हैं की कीमत अस्थायी असफलता या शर्मिंदगी हो सकती है, लेकिन कुछ न करने की कीमत जीवनभर का पछतावा और खोएं हुए अवसर लाता है।

जोखिम और अवसर का संतुलन : -

गलतियां करने से हमें डरना नही चाहिए क्योंकि यह जीवन का अनिवार्य हिस्सा है, और इन्हीं से हमें अनुभव, सीख, लचीलापन और बुद्धिमता प्राप्त होती है। इतिहास के कई महान व्यक्तित्वों ने गलतियों से सीखकर ही सफलता पाई है। उदाहरण के लिए थॉमस एडिसन ने बल्ब का आविष्कार करने से पहले हजारों असफल प्रयोग किए। उनकी प्रत्येक गलती ने उन्हें उन तरीकों से अवगत कराया जिनसे बल्ब नहीं बन सकती थी, और वो सफलता के और करीब पहुँचे। व्यापार जगत में इसे Analysis Paralyim कहते है – जब कोई संख्या सिर्फ सोचती रहती है और कदम नहीं उठती, उदाहरण के लिए अगर कोई कंपनी नई तकनीक इसलिए लॉन्च नहीं करती क्योंकि उसे डर है कि यह असफल हो सकती है, तो कोई दूसरी कंपनी यह कदम उठाकर बाजार पर कब्जा कर सकती है। गलत उत्पाद लेने से नुकसान हो सकता है, लेकिन इससे मिले अनुभव और डेटा अगली बार सफलता दिला सकते हैं। इसके विपरीत, कुछ ना करना हमें ठहराव और आत्म-संदेह की ओर ले जाता है।

इतिहास से मिले सबक : -

इतिहास में कई उदाहरण हैं जहाँ कार्रवाई-चाहे वह अपूर्ण ही क्यों न हो ये बड़ा बदलाव लाया। राइट ब्रदर्स ने उड़ान भरने के कई असफल प्रयास किए, लेकिन हर गलती ने उन्हें सही तकनीक के करीब पहुँचाया, यह उनके कई असफल प्रयास का ही नतीजा या जिससे वे हवाई जहाज का आविष्कार कर पाए वरना शायद दशकों लग जाते सिर्फ एक सही समय के इंतजार में। सामाजिक सुधारों में भी, गलत नीतियों को लागू करना और उनसे सीखना निष्क्रियता से बेहतर है। भारत में आर्थिक उदारीकरण (1991) एक जोखिम था, लेकिन इसने देश को वैश्विक अर्थव्यवस्था मे एक मजबूत स्थान दिलाया निष्क्रियता ने भारत को आर्थिक संकट में और गहरा डाल दिया होता जलवायु परिवर्तन इसका बहुत

बड़ा उदाहरण है। दशकों से वैज्ञानिक चेतावनी देते आ रहे हैं, लेकिन बड़े स्तर पर देर से कदम उठाए गए और जैव विविधता की हानि जैसी समस्याएँ उस शुरुआती लागत से कहीं अधिक हैं जो समय रहते उपाय करने से नहीं आती।

भारतीय दृष्टिकोण : और साहस

भारतीय संस्कृति में कर्म और साहस को हमेशा महत्व दिया जाता गया है। महाभारत में, अर्जुन ने युद्ध में भाग लेने से पहले संदेह का सामना किया, लेकिन श्रीकृष्ण ने उन्हें कर्म करने की प्रेरणा दी। यह दर्शन हमें सिखाता है कि गलत होने के डर से हमें कार्य करने से नहीं रुकना चाहिए।

प्रयोगशीलता की संस्कृति : -

गलतियों की कीमत को कम और कार्रवाई के लाभ को बड़ा बनाने के लिए हमें प्रयोग की संस्कृति अपनानी होगी इसका मतलब है – गलत प्रयासों को विफलता नहीं बल्कि सीखने का अवसर समझना। शिक्षा में छात्रों को चुनौतीपूर्ण समस्याएँ हल करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, बिना इस डर के कि गलत उत्तर देने पर दंड मिलेगा। कंपनियों में नवाचार और जोखिम लेने वालों को सराहना मिलनी चाहिए, भले ही उनका हर प्रयास सफल ना हो। अतः विशेष रूप से भारत में जहां असफलता को अक्सर कलंक के रूप में देखा जाता है, लोग जोखिम लेने से हिचकते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए शिक्षा प्रणाली में गलतियों को सीख का हिस्सा बनाना होगा।

निष्कर्ष : - गलत होने की कीमत अस्थायी होती है लेकिन कुछ न करने की कीमत स्थायी हो सकती है। गलतियाँ सुधारी जा सकती है लेकिन खोए हुए अवसर वापस नहीं आते।

मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि लोग उन चीजों के लिए अधिक पछताते हैं जो उन्होंने नहीं की बनाम उन गलतियों के लिए जो उन्होंने की। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति जो नौकरी बदलने या नया व्यवसाय शुरू करने से डरता हैं, वह बाद में अपने निर्णय पर पछता सकता है। निष्क्रियता हमें अपने सुविधा क्षेत्र में कैद रखती है, जहां ना तो विकास होता है और न ही नवाचार।

जीवन उन्हीं का साथ देता है जो आगे बढ़ने, जोखिम लेने और गलतियों को सीखने का हिस्सा मानने का साहस रखते हैं अंततः चलने के दौरान ठोकर खाना बेहतर है, बजाए खड़े होकर दुनिया को आगे बढ़ते देखना। असली असफलता गलत होने में नहीं है – असली असफलता कोशिश न करना है।

ऑफिस की खिड़की से दिखता सपना

राहुल रॉय चौधरी
अति. कनिष्ठ सहायक
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

मेरे ऑफिस की खिड़की से
बाहर का नजारा देखकर मुझे अक्सर अपने सपनों की याद आ जाती है। हल्की धूप, भागती सड़कें, आसमान में तैरते बादल और दूर से दिखते पेड़ – यह सब मिलकर जैसे मेरे मन को एक नई ऊर्जा से भर देते हैं। उस पल लगता हैं कि मैं किसी मशीन का हिस्सा नहीं, बल्कि एक बड़े उद्देश्य का साथी हूँ।

जे.सी.आई. मे काम करते हुए मुझे यह महसूस हुआ है कि हमारा काम सिर्फ कागजों तक सीमित नहीं हैं – यह देश की जड़ों से जुड़ा है। हमारी खिड़की से भले ही खेत नहीं दिखते, लेकिन हर फाइल, हर रिपोर्ट, हर योजना के पीछे कहीं न कहीं एक जूट किसान का चेहरा होता है, उनकी मेहनत होती है।

वह किसान जो सुबह की पहली रोशनी के साथ अपने खेत मे उतरता है, अपने हाथों से बुआई करता है, बारिश का इंतजार करता है, और उम्मीद करता है, कि इस बार उसकी फसल उसे सही दाम दिलाएगी। जे. सी. आई. उस उम्मीद का नाम है, और हम, उसके कर्मयोगी।

जब भी मैं खिड़की से बाहर देखता हूँ, तो महसूस होता है कि ये सिर्फ एक शीशा नहीं, बल्कि एक दृष्टिकोण है – जो हमें हमारे काम का असली महत्व दिखाता है। यह हमें याद दिलाता है कि हमारे ऑफिस की हर दीवार, हर फाइल, और हर मीटिंग के पीछे एक किसान की मुस्कान छुपी है।

यही खिड़की मुझे रोज बताती है कि मैं एक सिस्टम का हिस्सा नहीं, एक परिवर्तन का हिस्सा हूँ।

जूट की गाथा

जूट के सुनहरे धागे इतने महीन,
प्रकृति की कहानी को बयां करते हैं इतने साफीन।
हरे-भरे खेतों में जहाँ सूरज की किरणों खिलती हैं,
जूट के पौधे हल्के से झूमते हैं, इतने प्यार से।
उनके रेशे मजबूत हैं लेकिन छूने में नरम,
एक ऐसा खजाना जो प्रकृति की गोद में सुरक्षित हैं।
जूट की हल्की हवा की आवाज,
प्राचीन वृक्षों की कहानियों की फिर से जीवंत करती हैं।
बंगाल के दिल में जहाँ जूट की जड़े गहरी हैं,
एक कलाकार की विरासत जीवित है।
उनके हाथों में कौशल और सावधानी के साथ
जूट के सुनहरे धागे बुने जाते है इतने सुंदरता से।
बोरियों से लेकर दरी तक, और बैग इतने सुंदर,
जूट की बहुमुखी प्रतीक्षा वास्तव में अद्वितीय है।
एक प्रतीक जो स्थिरता की बात करता है,
जूट का इको-फ्रेंडली आकर्षण हर दिन चमकता है।
ओ जूट, प्यारे जूट, तुम्हारे रेशे इतने चमकीले,
तुम सुबह की पहली किरण में सोने की तरह चमकते हो।
प्रकृति का एक अनमोल उपहार
जूट, तुम अनुकरणीय हो।

मंजू रानी
कनिष्ठ निरीक्षक,
भेटागुड़ी डी. पी. सी.
क्षे. का. – कूचबिहार

वसंत का आगमन

वसंत का मौसम आया, उपज का त्यौहार लाया,
साथ में समृद्धि अपार लाया।
किसान खुश हुआ, हर खेत सँवर गया,
हर बीज से, उम्मीद नई जग गया।
सरसों की पीली छवि, हर मन को हरसाया,
हर सजी धरा पर, प्रकृति मुस्कराया।
इस मौसम की है एक खास बात,
हम बेचते जूट के रंग-बिरंगे बीज दिन रात।
तो आइए सजाएँ, अपने खेतों की तान,
वसंत संग बढ़ाएँ, नई फसल की शान।
प्रकृति संग, प्रकृति पर्व होली मनाएँ,
एवम् जूट के बीज से, हर खेत महकाएँ।
क्योंकि जूट है, उपजाऊ लाभकारी फसल,
हर किसान बनते, इसे लगाकर सफल।
जूट से होता पर्यावरण की रक्षा,
प्लास्टिक का बने, ये विकल्प सच्चा।
वसंत आए यही संदेश लाए,
जूट की खेती से, हर खेत सजाएँ।

शंभू प्रसाद सिंह
अति. विपणन प्रबंधक
गुलबबाग डीपीसी, फारबिसगंज आरएलडी

सितारों की छत तले

सितारों की छत तले, गंगा-गगन के पास,
भोर हुई तो भँवरा गाए, डूब गए आकाश।

चाँद भिगोए तारे सारे, खो गए उस पार,
मैं अँधेरा ढूँढ रहा हूँ तेरी आँखों के द्वार।

गहराइयों में छुपा हुआ, काला सघन अंधियार,
तेरी पलकों के कोनों में है प्रेम का उपहार।

तू खोजे सूरज को जाकर, नदी-पहाड़ की गोद,
मैं तो ढूँढूँ मेघ भरी, रात गहरी-सी ओढ़।

तेरे हर कोने-अंतरे में, बिखरी है वह याद,
लापरवाही से फेंक गया जो, तेरे स्पर्श का स्वाद।

सितारों की छाँव में दिल करता है संवाद,
तेरी चुप्पी में सुनता हूँ अनकहा सा नाद।

रात के आँचल तले मिल जाए बस बहार,
तेरे संग अँधियारा भी लगे उजली पुकार।

तेरी साँसों की सरगम में, बसी हुई है राग,
हर धड़कन कहती है मुझसे, तू ही मेरा भाग।

चाँद-सितारे गवाह बने, इस अटूट प्यार,
तेरे बिना अधूरा लगता, जीवन का हर द्वार।

सुलेखा कुंडु
पति – सौमेन कुंडु,
प्रबंधक (परि./विप.)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

जागो भारत के सपूत

जागो भारत के सपूत, जगी नई किरण,
जेसीआई ने बढ़ाए कदम, नई हुई हर धुन ।
जूट की बातें, किसानों के साथ,
महिलाओं का सम्मान, बने हर हाथ।
हरियाली का सपना, हम सब मिलकर लाएंगे,
धरती का ये सौंदर्य, फिर से खिलाएंगे।
जेसीआई का है संदेश,
हम लाएंगे नया परिवेश।
आर्थिक विकास की है राह,
सपनों को दें नई उड़ान।
किसानों की मेहनत का फल, हम तक लाना है,
जूट से बने सामान, हर घर में छाना है।
महिला सशक्तिकरण की गाथा लिखनी है,
हर बेटी को अब अपनी मंज़िल दिखानी है।
ईको-फ्रेंडली जीवन की राहें हम चुनेंगे,
पृथ्वी को फिर से हरा-भरा करेंगे।
जेसीआई का है विश्वास,
आगे बढ़ेगा हर प्रयास।
सपनों का होगा हर एक आयाम,
हम बनाएंगे अपना भारत महान।
सफलता की ये गाथा, हर दिल में बसी है,
आर्थिक विकास की धारा, हमारे संग बही है।
जूट हो, हरियाली हो, या नई टेक्नोलॉजी,
जेसीआई के साथ आएगी हर एक क्रांति।
हमारी एकता, हमारा अभिमान,
जेसीआई बनाएगा भारत महान।
जेसीआई का है संदेश,
हम लाएंगे नया परिवेश।
आर्थिक विकास की है राह,
सपनों को दें नई उड़ान ।
जेसीआई का सपना, भारत का नारा,
हर खेत, हर घर, हो खुशहाल हमारा।
जूट, किसान, महिला का हो सामान,
हरियाली के संग बढ़ेगा भारत महान।

विश्वजीत पाल
उप प्रबंधक, (मानव संसाधन)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

दिनांक 15 अगस्त, 2025 को भापनि के प्रधान कार्यालय में "अभिप्रेरणा कक्ष" का उद्घाटन करते हुए श्री मलय चंदन चक्रबर्ती, पटसन आयुक्त

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान "टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता" में भाग लेते हुए अधिकारीगण/कर्मचारीगण

दिनांक 22.02.2025 को भापनि के बेरचंपा डीपीसी में श्री धीरेंद्र कुमार, निदेशक(आईएफडब्ल्यू), वस्त्र मंत्रालय का दौरा

भापनि

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार की संस्था

पटसन भवन 3री और 4थी मंजिल, ब्लॉक सी एफ, एक्शन एरिया - 1, न्यू टाउन, कोलकाता 700156